समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अक्टूबर २०२२ • वर्ष ७३ • अंक १०

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

इस अंक में :

सम्पादकीय: दुर्गा-संगठन एवं शक्ति का प्रतीक

अध्यक्षीय: हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग-हमारे पर्व त्यौहार

रपट: राजस्थान सरकार का कान्क्लेव, प. बंग तदर्थ समिति गठित

प्रादेशिक समाचार: उत्कल, बिहार, केरल, पूर्वोत्तर, दिल्ली, झारखंड

आलेख: राजस्थानी भाषा की शाखाएँ व बोलियाँ -डॉ. रमेशचंद्र शर्मा

स्वास्थ्य ही धन है: तुलसी, एलोवेरा

बधाई !

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पुर्नर्निवाचित अध्यक्ष - श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया

केरल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पुर्नर्निवाचित अध्यक्ष - श्री श्याम सुंदर अग्रवाल

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ अक्टूबर २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक १०
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक — पृष्ठ संख्या

- **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** ५-६
  दुर्गा-संगठन एवं शक्ति का प्रतीक
- **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ७
  "हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग–हमारे पर्व त्यौहार"
- **रपट –**
  राजस्थान सरकार का कान्क्लेव,
  प. बंग तदर्थ समिति गठित ९
- **प्रादेशिक समाचार**
  उत्कल, बिहार, केरल, पूर्वोत्तर, दिल्ली, झारखंड १०-१६
- **आलेख –**
  राजस्थानी भाषा की शाखाएँ व बोलियाँ –
  डॉ. रमेशचंद्र शर्मा १७-१८
- **स्वास्थ्य ही धन है –**
  तुलसी, एलोवेरा १९-२०,२३
- **कविता –**
  प्रेमलता खण्डेलवाल, रवि पुरोहित २४-२५
- **देव-स्तुति :** डॉ. जुगल किशोर सर्राफ २६

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.in

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

रोजगार योजना

जैसा कि आप सबको विदित है, कि अपनी संस्था रोजगार के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही है। आपको यह जानकर आंतरिक खुशी भी होगी कि अपना समाज रोजगार प्रदान करने वालों में है और संस्था में आई हुई प्रत्येक आवेदन को जल्द ही उचित रोजगार देने की व दिलाने की क्षमता रखता है। इस कार्य को और अधिक उपयोगी एवं जन जन का कार्यक्रम बनाने के लिए अब हम सबको एक और सार्थक पहल करने की कोशिश करनी चाहिये।

एक तरफ अपने पास रोजगार चाहने वालों से, रोजगार देने वाली की तादाद ज्यादा है। दूसरी तरफ पूरे भारतवर्ष में अपने समाज के ही बहुत प्रतिभावान सदस्य उचित जगह पर या उचित तनख्वाह के साथ रोजगार की तलाश में हैं।

हमें उनको उचित सम्मान व उचित स्थान दिलाने के लिए सिर्फ इतना सा प्रयास करना है कि आप उनका विवरण इकट्ठा कर संस्था के केंद्रीय कार्यालय में भेज दें। हम इनको एक जगह लिपिबद्ध करके उचित रोजगार प्रदान करने वालो के पास पहुंचा कर दोनों तरफ से समुचित प्रशंसा पाने का प्रयास करेंगे।

कहीं पर भी, किसी तरह का भी, किसी क्षेत्र का भी, मारवाड़ी व्यक्ति रोजगार का इच्छुक हो तो, आपको सिर्फ उसका विवरण भेजना है, बाकी का काम हम और हमारी टीम पर छोड़ दे।

एक व्यक्ति को समुचित रोजगार, एक परिवार व उसकी आने वाली पूरी पीढ़ी को सम्मानजनक स्थान पर पहुंचा सकता है। बस अपना इतना ही मक्सद है कि हर मारवाड़ी परिवार सम्मानपूर्वक रहे।

दिनेश कुमार जैन
चेयरमैन,
रोजगार सहायता उपसमिति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
८८वां स्थापना दिवस

प्रिय महोदय,

८७ वर्ष पूर्व १९३५ में हमारे दूरदर्शी पूर्वजो ने समाज को संगठित करने एवं उन्हें अपने अधिकारों से वंचित न होने देने के उद्देश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की थी। मारवाड़ी समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था के रूप में सम्मेलन देश के २२ प्रान्तों में कार्य कर रहा है। दिन-प्रतिदिन समाज के लोग सम्मेलन से जुड़ रहे हैं। सदस्य संख्या तो बढ़ रही है किन्तु अभी तक इसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। इस दिशा में हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा ताकि **'संगठित समाज, सशक्त समाज'** का सम्मेलन का नारा सफलीभूत हो सके। कोलकाता महानगर की कई संस्थाएँ भी सम्मेलन से सम्बद्ध हुई हैं, यह एक अच्छी शुरूआत है।

सम्मेलन का **८८वां स्थापना दिवस समारोह २५ दिसम्बर २०२२** को कोलकाता में मनाया जायेगा, जिसमें पूरे देश के प्रतिनिधि उपस्थित होंगे। इस अवसर पर सम्मेलन का सर्वोच्च **'मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान'**, मारवाड़ी समाज के एक विशिष्ट व्यक्तित्व को देश अथवा समाज के प्रति उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रदान किया जाएगा। साथ ही, सम्मेलन के मुखपत्र **समाज विकास** का एक पठनीय एवं संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा।

सम्मेलन को प्रत्येक मौके पर आपका मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता आया है। इसी के बलबूते सम्मेलन अपनी शक्ति एवं ऊर्जा के साथ समाज-उत्थान के कार्यों को अंजाम दे पाता है।

इस विशेषांक को सफल बनाने में आपसे प्रकाशनयोग्य सामग्री तथा विज्ञापनरूपी सहयोग प्राप्त होगा, इसका पूर्ण विश्वास है।

आदर सहित

गोवर्धन प्र. गाड़ोदिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

शिव कुमार लोहिया
सम्पादक : समाज विकास

संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

भानीराम सुरेका, पवन कुमार गोयनका, पवन कुमार सुरेका,
अशोक कुमार जालान, डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका, विजय कुमार लोहिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण

आत्माराम सोंथलिया
चेयरमैन, वित्तीय उपसमिति

गोपाल अग्रवाल, सुदेश कु. अग्रवाल
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

बसंत कुमार मित्तल
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

दामोदर प्रसाद बिदावतका
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

Advertisement Manager
SAMAJ VIKAS
4B, Duckback House (4th Floor)
41, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700017 (W.B.)
e-mail : aimf1935@gmail.com

Dear Sir,

Please publish a Special/Full/Half Page Advertisement in your Special Issue to be brought out on the occassion of 88th FOUNDATION DAY of AIMF.

Our cheque is enclosed/will be sent in due course on receipt of your bill.

Thanking you,

Sincerely Yours

Name ,,,
Address ....
....
Phone / Mobile No...
e-mail..

(Signature)

Tariff

Back Cover Page (Colour)	Rs.	50,000/-
Inside Covers (Colour)	Rs.	30,000/-
Special Full Page (Colour)	Rs.	20,000/-
Full Page (Colour)	Rs.	15,000/-
Full Page (B & W)	Rs.	10,000/-

Mechanical Data

Overall Page Area	27x19cm
Print Area	22x16cm
No. of Columns	Two

All Cheques to "All India Marwari Federation"
G.S.T. No. 19AABTA0938Q1ZB, PAN No. AABTA0938Q, Bank : State Bank of India
Branch : Shakespeare Sarani (Kolkata), A/C No. 32028596548, IFSC CODE : SBIN0003031

दुर्गा-संगठन एवं शक्ति का प्रतीक

दुर्गापूजा का त्यौहार देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग रुपों में मनाया जाता है। बंगाल में षष्ठी से दशमी तक पूजा होती है। प्रत्येक व्यक्ति नये उमंग एवं नये उत्साह से भर उठता है। इस वर्ष बंगाल के दुर्गापूजा का वैश्विक संस्था यूनेस्को ने अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी हैं, जो कि सभी देशवासियों के लिये गर्व की बात है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के तहत मौखिक परम्पराएँ, कला प्रदर्शन, सामाजिक प्रथायें, अनुष्ठान और उत्सव कार्यक्रम, पारम्परिक शिल्प कौशल आदि का समावेश होता हैं। यह ज्ञातव्य रहे कि इसके पहले देश के अन्य १३ उत्सवों को इस सूची में पहले ही शामिल किया जा चुका है। ये हैं – रामलीला, वैदिक मंत्रो के पाठ करने की परम्परा, केरल की कुटियाट्टम, उत्तराखंड का रमण त्यौहार, केरल का मुटियेट्टु, राजस्थान का कालबेलिया, छऊ नृत्य, बौद्ध धर्म ग्रंथो के पाठ करने की परम्परा, मणिपुर का संकीर्तन, पंजाब का ठठेरे धातु हस्तशिल्प, योग, नवरोज, कुंभ मेला।

दुर्गा पूजा को बस्तर में इसे माँ दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व के रूप मे मनाते हैं। दंतेश्वरी माता माँ दुर्गा का ही रूप है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लु मनाली का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। दस दिन तक यह पर्व मनाया जाता है। पहाड़ी लोग धूमधाम से अपने ग्रामीण देवता की झांकी निकालते हैं। कश्मीर मे भी नवरात्रि श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। माता खीर भवानी के दर्शन के लिए लोग जाते हैं। कोटा राजस्थान में नवरात्रि एवं दशहरा का पर्व मनाया जाता है। केरल में इसे बिरू बुल्लाकामु पर्व कहते है। दशहरा के दिन बच्चे अपनी पुस्तको को देवी के सामने रखकर पूजा करते है। गुजरात में नौ दिनों तक गरबा नृत्य होता है। पूरे उत्तर भारत में यह पर्व नवरात्रि के रूप मे मनाया जाता है।

माँ दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री देवी है। अपने कठिन एवं दीर्घ तपस्या के फलस्वरूप ब्रह्मा ने महिसासुर को आशीर्वाद दिया कि कोई भी आदमी या देवता उसे नही मार सकेगा। तदनुपरांत दम्भी महिषासुर ने पृथ्वी में आतंक एवं हिंसा का घातक दौर प्रारम्भ कर दिया। चारो ओर त्राहिमाम मच गया। पुराणों में उल्लेख है कि देवतागण ब्रह्माजी के पास जाकर रक्षा की प्रार्थना की। उनके अनुसार दैत्यराज का वध कुंवारी कन्या ही कर सकती थी। इस लिये देवताओं ने मिलकर एक शक्तिशाली कन्या का सृजन किया। देवी के शरीर का अंग देवों के तेज से निर्मित हुआ। भगवान शिव के तेज से माता का मुख, श्री हरि विष्णु के तेज से भुजाएं, ब्रह्माजी के तेज से माता के दोनों चरण बने। यमराज के तेज से कुच, इंद्र के तेज से कमर, वरुण के तेज से जांघे, पृथ्वी के तेज से नितंब, सूर्य के तेज से दोनो पैरों की अंगुलियाँ, प्रजापति के तेज से दांत, अग्नि के तेज से दोनों नेत्र आदि आदि। असूरों के अंत के लिये अपार शक्ति की आवश्यकता थी। इसलिये भगवान शिव ने अपना त्रिशुल, भगवान विष्णु ने चक्र, हनुमान जी ने गदा, श्री राम ने धनुष, अग्नि ने शक्ति व वाणों से भरे तरकश, वरुण ने दिव्य शंख, इन्द्र ने बज्र, शेषनाग ने मणियों से सुशोभित नाग, ब्रह्मा ने चारो वेद तथा हिमालय पर्वत ने माता को उनका वाहन सिंह दिया।

आंतरिक शक्ति एवं अस्त्रशस्त्र से युक्त देवी ने विराट रूप धारण किया। उनके प्रादुर्भाव से आंखो को चकाचौध कर देने वाली सूर्य से अधिक तेज प्रकाश उत्पन्न हो गया। उन्हे देखकर असुर भयभीत हो गये। माँ में आठ प्रकार की शक्तियाँ थी – शरीर बल, विद्या बल, चातुर्य बल, धन बल, शस्त्र बल, शौर्य बल, मनोबल एवं धर्म बल। दुर्गा – महिषासुर का युद्ध १० दिनों तक लगातार चला। महिषासुर निरंतर अपना रूप बदल कर युद्ध करता रहा। अंत में उसने भैंस का रूप धारण किया तो माँ ने उसके सिर को धड़ से अलग कर उसका वध कर दिया। दुर्गा भगवान की उर्जा पहलु है। वह पवित्रता, ज्ञान, सत्य और आत्म साक्षात्कार की अवतार है। दुर्गा एक गतिशील उर्जा हैं, जिसके माध्यम से सर्वोच्च चेतना प्रकट होती है। देवी दुर्गा सर्वोच्च शक्ति का स्वरूप है जो ब्रह्मांड में नैतिक और धार्मिक व्यवस्था धारण करती है। दुर्गा एक सर्वव्यापी बहु आयामी देवी है।

माँ दुर्गा के प्रादुर्भाव की कहानी से दो बाते उभर कर आती है। पहली तो यह है कि संघे शक्ति कलियुगे ही नहीं बल्कि संगठन की शक्ति हर युग में रही है। सीधी सी बात है। बिखरोगे तो कमजोर होओगे, संगठित रहोगे तो असंभव भी संभव हो जायगा। आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्र एवं समाज में हर व्यक्ति की शक्ति महत्वपूर्ण है। हम अगर संगठित रहेंगे तो दुर्गा का प्रादुर्भाव होगा एवं सब प्रकार की विघ्न बाधाये धराशायी हो जायगी। समाज की दृष्टि से भी हमें इस पौराणिक घटना से सीख लेने की आवश्यकता है। आज हमारा समाज विभिन्न तबको, घटको, आदि में बटा हुआ है। सम्मेलन की स्थापना इसी उद्देश्य से हुआ था कि समाज के सभी घटको को एक सूत्र में पिरोना है। मैं समझता हूँ इस दिशा में पूरी सफलता मिलना अभी बाकी है। समाज में शक्ति है पर वह बिखरी हुई हैं। संगठन से ही उस शक्ति को हम जागृत कर सकते हैं। सम्मेलन अगर इस दिशा से सफल होता है तो दुर्गा रूप धारण कर समाज को सभी प्रकार से सुरक्षित एवं प्रगतिशील रख सकेगा।

दूसरी सीख हमे मिलती हैं नारी शक्ति किसी भी अन्य शक्ति से कम नही हैं। नारी को अबला कहना या समझना एक नादानी है। दुनिया की आधी आबादी अभी भी अनेको जंजीरो में जकड़ी

हुई है। हमारे समाज में भी इसका ज्वलंत उदाहरण देख सकते है। एक समय था जब कन्याओ को शिक्षा से वंचित किया जाता था। पर्दा प्रथा के द्वारा उन्हें असहज जिन्दगी जीने के लिये बाध्य किया गया। सामाजिक हस्तक्षेप एवं बदलते परिवेश से हमारी नारी शक्ति जागृत हो रही है। हमारे समाज की कन्याएँ समाज में अपना यथोचित स्थान प्राप्त करने के लिये न सिर्फ प्रयत्नशील हैं बल्कि काफी कुछ हासिल भी किया है। इस संदर्भ में मैं दो उदाहरण देना चाहुँगा।

सुश्री सारिका जैन

हाल ही में उडीसा के एक छोटे से गांव कांटाबाजी में जन्मी सारिका जैन के विषय मे जानकारी प्राप्त हुई। महज दो वर्ष मे पोलियो ग्रस्त हो गई। सारिका के अभिभावको को पोलियो के विषय मे उचित जानकारी नही थी। डाक्टर ने मलेरिया समझ कर इलाज किया, फलस्वरूप वह डेढ़ साल तक कोमा मे रही। वह विस्तर पर पड़ी रही। लेकिन उनके घरवालो ने हार नहीं मानी। बहुत सी मुश्किलों के बाद ४ वर्ष की उम्र मे उसने चलना प्रारम्भ किया।

उसके बाद शुरु हुआ एक नया दौर जब उसके माता पिता ने सारिका को स्कूल में दाखिला करने की सोची। कही भी कोई स्वीकार नही कर रहा था। जैसे तैसे एक विद्यालय में दाखिला हुआ, पर अन्य बच्चे उसके साथ दुर्व्यवहार करते।

परिवार ने उसका किन्तु एक सामान्य बच्चे की तरह लालन पालन किया। फलस्वरूप उसके मन में स्वयं के प्रति दीर्घ नफरत भाव नही पैदा हुई। सारिका एक मारवाड़ी परिवार से आती है। १२ वीं पास करने के बाद वह चार वर्ष तक घर मे ही रही। पढ़ने के जुनून ने किन्तु उसका दामन नही छोड़ा। उसने CA की पढ़ाई करनी चाही। उसके अभिभावकों ने उसका भरपूर सहयोग दिया। वह घर मे रहकर ही सीए की इन्ट्रेंस परीक्षा की तैयारी करती रही। उसके साथ गाँव के अन्य ४० बच्चो ने सीए की परीक्षा दी थी। सारिका ने उन सभी से अधिक नम्बर लाये। उसके बाद सीए की पढ़ाई करने वह शहर मे रहने लगी। वह अच्छे अंक के साथ सीए बनने मे सफल रही।

उसके घर के लोगो ने तय किया कि घर पर ही उसके लिये एक कार्यालय बना देंगे ताकि वह अपना काम कर सके। पर सारिका आई ए एस बनने का सपना देखने लगी। यह जानकर उसके घरवालो को आश्चर्य हुआ। उन्होने सारिका को कहा कि उसके जैसे लोग इतने ऊँचे सपने नही देखा करते। सारिका अपने फैसले पर टिकी रही। सारिका ने अपने दम कर दिल्ली रहकर कोचिंग ली एवं अपनी लगन, मेहनत के बदौलत सन् २०१३ में आई.ए.एस. सिविल सेवा परीक्षा में ५२७वीं एक रैक हासिल किया। आज वह मुम्बई मे आयकर विभाग के उपायुक्त के पद पर कार्यरत हैं एवं हाल ही मे देश के वित्तमंत्री ने उत्कृष्ट कार्यों के लिये उन्हें मान्यता प्रदान की है। सारिका के पिता साधुराम जी जैन से मैंने सम्पर्क स्थापित किया। सन् २०१४ में उत्कल प्रा.मा.स. ने भी सारिका का सम्मान किया था। सारिका एवं उसके अभिभावकों को मैं साधुवाद देना चाहूँगा। जिन्होंने विपरीत स्थितियों में हार नहीं मानी एवं इस बात को चरितार्थ किया कि हौसले की हार नहीं होती।

सुश्री रुमी देवी

एक अन्य कन्या रुमी देवी का जन्म वाडमेर के रावतसर १९८८ में हुआ। गरीबी के कारण ८वीं कक्षा में उसने स्कूल छोड़ दिया। १७ वर्ष की उम्र में शादी के बाद अपने पहले बेटे को उसके जन्म के ४८ घंटो में खोना पड़ा। वह कमाने के लिए सन २००६ में १० महिलाओं को समझाने के बाद एक स्वयं सहायता समूह शुरु किया। अपने लगन, निष्ठा, परिश्रम एवं दूरदर्शिता के बल पर उसने सफलता के अनेको मुकाम हासिल किये। आज वह पूरे भारत के आदिवासी कारीगरो और अल्प संख्यको को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रही है। साथ ही साथ ३० हजार महिलाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार मुहैया करवाने से सफलता हासिल की है। २०१८ में राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने उन्हे नारीशक्ति पुरस्कार से विभूषित किया। आज उनके हस्तशिल्प एवं डिजाइन की धूम देश-विदेश में अनेको जगह है। समाज की कन्यायें सभी क्षेत्रों में अपने हौसले, लगन, मेहनत एवं सफलता का परचम लहरा रही हैं। समाज की दुर्गाएँ समाज का नाम रौशन कर रही है।

हमारे समाज की दुर्गा स्वरूप कन्याओं को समान अवसर दिलवाने में सम्मेलन की महती भूमिका रही है। इस प्रकार की गतिविधियाँ अत्यावश्यक है। समाज सुधार के कार्य का कोई विकल्प नहीं है। सम्मेलन की यह पहचान भी है।

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

"हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग – हमारे पर्व त्यौहार"

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

"सभी सुधी स्नेहीजनों का सादर अभिनंदन"

सभी के निरोग एवं स्वस्थ रहने की मंगल कामना प्रभु से है। यह अक्टूबर माह सनातन संस्कृति के पर्व, पूजा एवं त्योहारों तथा जयन्तियों से भरा पड़ा है। महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, महर्षि बाल्मीकि की जयंती, शारदीय नवरात्र, दशहरा, शरद पूर्णिमा, बंगाल की लक्खी पूजा, मैथिली पर्व कोजागरा, करवा चौथ, धनतेरस, रूप चौदस या नरक चतुर्दशी या यम चौदस, दीपावली, काली पूजा साथ साथ इस बार सूर्य ग्रहण भी, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, प्रकृति के प्रति आस्था का महापर्व छठ आदि। हमारी संस्कृति में इतने पर्व त्योहारों की संरचना क्यों की गई है.....मानव जीवन की उबाउपन एवं थका देने वाली दिनचर्या में कुछ आनंद - रंग - उमंग भरने के लिए, साथ ही साथ उच्च आध्यात्मिक जागृति के लिए। कई जगह दीपावली के बाद प्रीति सम्मेलन का समारोह करते हैं–बड़ों का आशीर्वाद लेने के लिए, जिनसे कई दिनों से भेंट मुलाकात नहीं हुई हो, उनसे मिलकर संबंध पुनः स्नेहक्त करने के लिए। संवाद से ही संपर्क बनता है, बढ़ता है और इससे समरता का स्वाभाविक विकास भी होता है।

९ दिनों तक माँ शक्ति की आराधना होती है जिसे नवरात्रा के नाम से विभूषित किया गया है। शाक्त संप्रदाय महाशक्ति माँ भगवती की उपासना उसके विभिन्न रूपों में तथा विभिन्न विधियों से करता है। विभिन्न रूपों में यथा महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली, गौरी, तारा, चामुंडा, ललिता, भैरवी, धूमावती, छिन्नमस्ता, दुर्गा, मालंगी आदि। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री – इन नवदुर्गा रूपों में उन्हीं आदिशक्ति की आराधना होती है। वही शाकम्बरी है, वही भामरी है, वही कुंडलिनी है और वही योग माया है। माँ महिषासुर मर्दिनी हैं। माँ ने ही शुम्भ एवं निशुंभ जैसे प्रचंड दैत्यों का वध कर जगत को उनके अत्याचारों से उबारा था। माँ ने और भी अन्य कई असुरों का विनास करके पृथ्वी को त्राण दिया था।

असुरों और राक्षसों के भार से भू को हल्का करने के लिए जगत नियंता प्रभु को राजा दशरथ के यहां उनकी बड़ी रानी कौशल्या की गोद में राम के रूप में अवतरित होना पड़ा। दूसरी तरफ परम ज्ञानी, ऋषि पुलस्त्य का पौत्र, कुबेर का छोटा भाई, वैदज्ञ शिव भक्त, शिव ताण्डव स्तोत्रम् का रचयिता पर अपने ऐश्वर्य एवं बल के अहंकार मे असुरशक्ति धारण करने वाला रावण सभी देवों एवं ग्रहों को परास्त करके, अपने वश में कर रखा था। उसकी आसुरी वृत्तियों से सभी त्रस्त थे, जिसका विनाश प्रभु ही कर सकते थे। अयोध्यावासी चाहते थे कि राम अयोध्या के सिंहासन पर बैठें पर ऐसा होने से राक्षसों के कुकृत्यों एवं अत्याचारों से धरा को कैसे त्राण मिलता। जिस उद्देश्य के लिए भगवान राम अवतरित हुए थे, वह उद्देश्य अपूर्ण रह जाता इसलिए महाराज दशरथ की सबसे प्रिय रानी कैकेई को महामाया ने माध्यम बनाकर राम को वल्कल वस्त्र में १४ वर्षों के लिए वन भिजवाया। सीता और छोटे भाई लक्ष्मण ने भी उनका अनुकरण किया। भगवान के अवतरण के उद्देश्य का ही एक भाग है यह। रावण द्वारा सीता हरण हुआ। उसके पूर्व रावण के भाई खर और दूषण का भगवान राम द्वारा वध किया गया। राम और रावण में भयंकर युद्ध हुआ और आश्विन शुक्ला दशमी को रावण का वध हुआ। इस विजय की प्रसन्नता में दशहरा को असत्य पर सत्य की जीत विजयादशमी भी कहा जाता है। १४ वर्षों का वनवास पूरा करने के पश्चात अयोध्या लौटे राम का अयोध्यावासियों ने दीप मालिका सजाकर अभिवादन किया। कालांतर में इसे ही दीपावली के नाम से जाना जाने लगा।

अन्य पर्व त्योहारों के साथ-साथ आस्था के महापर्व छठ का हिंदी भाषी राज्यों में विशेष कर माँ गंगा के तटीय भू भागों पर बहुत महत्व है। आस्था का यह महापर्व तीन दिनों तक पूरी पवित्रता एवं निष्ठा के साथ संपादित किया जाता है। बिहार में तो अपने मारवाड़ी समाज के लोग भी पूरी तन्मयता से एवं आस्था से श्रद्धा के साथ इस पर्व को बड़े मनोयोग से उपवास तथा पूजा करके पवित्रता के साथ संपादित करते है। यह अपने समाज की स्थानीय समुदाय के साथ समन्वय का अनुपम उदाहरण है। यही एक ऐसा पर्व है जिसमें अस्तगामी सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्य उपासना का यह महापर्व है। सूर्योदय के अर्घ्य के साथ इस महापर्व का समापन होता है।

पर्व त्योहारों के बारे में इतना कुछ लिखने के पश्चात भी इसे संक्षेप की ही संज्ञा दी जाएगी। इनके ऊपर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। इन बातों को सभी जानते हैं, इन को लिखने का उद्देश्य यही है कि इससे हम गर्व कर सकें कि हमारी संस्कृति कितनी सुदृढ़, प्रेरक एवं प्रफुल्लित है। हमें अपने पर्व त्योहारों को पूरी श्रद्धा आस्था एवं लगन के साथ मनाना चाहिए एवं अगली पीढ़ी को अपने संस्कारों के प्रति आस्था सिखानी चाहिये। ऐसी समृद्ध परम्पराएँ आपको किसी अन्य संस्कृति में उपलब्ध नही होगी। उत्तम संस्कृति से ही अच्छे संस्कारों का निर्माण होता है। पश्चिमी भौतिकता की तड़क-भड़क एवं मिथ्या आकर्षण में हम अपनी संस्कृति से विलग होते जा रहे हैं, इस वजह से संस्कारों का भी ह्रास हो रहा है। संस्कृति एवं संस्कार संरक्षण हमारा दायित्व भी है।

अक्टूबर माह २ ऋतुओं का संधिकाल है–शरद एवं हेमंत। पावस ऋतु जा चुकी है, फिर भी अभी तक वर्षा हो रही है। पर अब गर्मी तथा आद्रता में कमी आई है। सुबह शाम वायु स्पर्श से शीत का आभास होता है। ऋतु के इस संधिकाल में स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत

अर्थात सभी सुखी हों, सभी निरोग रहें, सभी का कल्याण हो, कोई भी दुख का भागी नहीं बने। सभी के मंगल की अभिलाषा हमारी संस्कृति का मूल मंत्र है।

ईश्वर हम सबका मंगल करे। आप सभी का पुनः अभिनंदन।

जय राष्ट्र जय समाज

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

राजस्थान सरकार द्वारा कान्क्लेव आयोजित

७-८ अक्टूबर २०२२ को राजस्थान फाउंडेशन (राजस्थान सरकार) द्वारा जयपुर में "इंवेस्ट राजस्थान एवं एन.आर.आर कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका एवं दिल्ली प्रा.मा.स. के महामंत्री श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने भाग लिया।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा एवं श्री रतन लाल जी शाह ने भी जूम के माध्यम से सहभागिता की एवं अपने विचार साझा किए।

एन.आर.आर. कॉन्क्लेव में सम्मेलन की तरफ से श्री पवन गोयनका ने अपने विचार रखे तथा राजस्थान सरकार से अनुरोध किया कि –

(१) राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलवाने के प्रयासो में राजस्थान सरकार सहायता करे।

(२) प्रवासी बंधुओं को होने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं का राजस्थान सरकार संज्ञान ले। इसके लिए एक समन्वय समिति का गठन किया जाये जो प्रवासी बंधुओं एवं सरकार के मध्य कड़ी का कार्य करें। सम्मेलन इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

(३) राजस्थान स्थित पूर्वजों की जमीन जायदाद को सस्ती दरों पर वर्तमान पीढ़ी को नाम हस्तांतरण की प्रक्रिया को सरल बनाकर चालू रखा जाए।

श्री गोयनका ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत एवं राजस्थान सरकार में उद्योगमंत्री श्रीमती शकुंतला जी से मुलाकात कर सम्मेलन की गतिविधियों के बारे में बताया एवं उपरोक्त विषयों पर ज्ञापन दिए।

प. बंग प्रादेशिक मा सम्मेलन अध्यक्ष का पदत्याग

शिव कुमार लोहिया के नेतृत्व में तदर्थ समिति का गठन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंद किशोर जी अग्रवाल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपने पत्र (१३ जून २०१७) में बतौर प्रादेशिक अध्यक्ष पदभार ग्रहण करने का उल्लेख करते हुए कोरोना सहित अन्य कुछ अडचनो की वजह तय समय मे प्रादेशिक अध्यक्ष का चुनाव न करवाने की स्थिति में स्वेच्छा से प्रादेशिक अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया। साथ ही उन्होंने सम्मेलन के हित में जरूरत पड़ने पर अपनी सेवायें आगे भी उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

इसकी जानकारी देते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन गाड़ोदिया ने कहा कि केंद्रीय सम्मेलन के संविधान के तहत वर्तमान परिस्थिति में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभी पदाधिकारी पद से मुक्त माने जायेंगे तथा उसके सभी अधिकार केंद्रीय सम्मेलन के निहित होंगे।

श्री गाड़ोदिया ने कहा कि सम्मेलन संविधान के तहत पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी अधिवेशन बुलाने एवं नये पदाधिकारियों के चुनाव हेतु तदर्थ समिति का गठन किया जा रहा है, जो निम्नक्त होगी। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया को समिति का चेयरमैन, सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं निवर्तमान राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी को संयोजक बनाया गया है। सदस्यगण में श्री आत्माराम सोंथालिया (पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, अ.भा.मा.स.), श्री विजय गुजरवासिया (पूर्व अध्यक्ष प.बं. प्रा.मा.स.) श्री विजय डोकानिया (पूर्व अध्यक्ष प.ब. प्रा.मा.स.), श्री निर्मल कुमार सराफ, श्री पवन कुमार जालान है।

श्री गाड़ोदिया ने कहा कि इस तदर्थ समिति का अधिकतम कार्यकाल तीन माह होगा। अतः तदर्थ समिति केंद्रीय संविधान के तहत तत्काल प्रभाव से कार्य प्रारंभ करेगी एवं पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के दिन प्रतिदिन के क्रिया कलापों का अधिवेशन निरीक्षण संचालन करते हुए यथा शीघ्र प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नये पदाधिकारियों का चुनाव एवं प्रादेशिक अधिवेशन के आयोजन की व्यवस्था करेगी।

अग्रसेन जयंती पर बुजुर्गों का सम्मान

बरपाली मारवाड़ी सम्मेलन व मारवाड़ी महिला समिति द्वारा वणिक भवन में अग्रसेन जयंती महासमारोह के साथ पालन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप से हस्तकर्घा मंत्री श्रीमती रीता साहू व सम्मानित अतिथि के रूप में वणिक संघ के सभापति नंदलाल साहू, उद्योगपति मोती लाल अग्रवाल मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा संतोष देवी अग्रवाल एवं उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष प्रदीप अग्रवाल प्रमुख रूप से मंचासीन रहकर सभा को संबोधित किया। सर्वप्रथम भगवान श्री अग्रसेन जी के सम्मुख सभी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सम्मेलन के अनिल अग्रवाल ने स्वागत भाषण दिया एवं सचिव चंदन अग्रवाल ने अग्रसेन जयंती से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर २५ बुजुर्गों का सम्मान किया गया। जयंती पर आयोजित कार्यक्रम विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं को अतिथियों के द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम को मुख्य रूप से सुरेश अग्रवाल, विनोद अग्रवाल, शिव अग्रवाल, चंदन अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, किरण अग्रवाल, कंगन अग्रवाल, हरीश अग्रवाल प्रमुख रूप से उपस्थित रहकर सफल बनाया। कार्यक्रम के अंत में अनिल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नि:शुल्क कृत्रिम अंग शिविर का आयोजन

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में तीन दिवसीय ७ अक्टुबर २०२२ से ९ अक्टुबर २०२२ तक नि:शुल्क कृत्रिम अंग शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री रोहित पुजारी, उच्च शिक्षा मंत्री (ओडिशा सरकार), माननीय श्री जयनारायण मिश्रा, ओडिशा विधानसभा के विपक्ष के नेता, श्री अशोक, कुमार जालान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन श्री गोविन्द अग्रवाल, अध्यक्ष, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मलन एवं श्री प्रतिक अग्रवाल, उपाध्यक्ष, मारवाड़ी युवा मंच भी उपस्थित थे। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में १०६ लोगो को नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रदान किये गये। कार्यक्रम के आयोजन में विशेष रूप से सम्बलपूर मारवाड़ी युवा मंच, उदय स्टार के अध्यक्ष श्री प्रियांशु अग्रवाल, श्रीमती रश्मी अग्रवाल, अध्यक्ष मारवाड़ी युवा नवचेतना के अलावा कार्यक्रम के संयोजक श्री दीपक मित्तल, मारवाड़ी युवा मंच सम्बलपूर उदय स्टार एवं श्रीमती अनीता अग्रवाल, मारवाड़ी युवा नवचेतना जी के साथ पूरी टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों को करने की इच्छा जाहीर की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह

मारवाड़ी समाज के विभिन्न घटकों के साथ आपसी सामंजस्य सुदृढ़ करने के दृष्टिकोण से माहेश्वरी और अग्रवाल के बाद इस माह जैन समाज के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम और सम्मान समरोह का आयोजन किया गया। उपस्थित जनसमूह को विद्वान वक्ताओं ने जैन धर्म की जानकारी दी। महिलाओं और बच्चों ने संस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत किए और प्रमुख जैन विभूतियों को सम्मानित किया गया।

अग्रसेन जयंती के अवसर पर सम्मेलन सभाकक्ष में हवन-पूजन और प्रसाद वितरण तथा मुख्य चौराहे पर अग्रसेन जी के भंडारे का आयोजन किया गया। नवरात्रि का भी अवसर होने के कारण महिलाओं और बच्चो ने कई मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किए और जमकर डांडिया नृत्य का आनंद लिया।

बिहार सरकार के वित्त मंत्री श्री विजय चौधरी और भवन निर्माण मंत्री श्री अशोक चौधरी के द्वारा विधान पार्षद ललन कुमार सर्राफा जी की उपस्थिति में प्रादेशिक अध्यक्ष महेश जालान को समाज रत्न सम्मान प्रदान किया गया।

इस माह कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य भी संपन्न हुए। आठ दशक से भी अधिक अवधि से कार्यरत बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का सोसाइटीज एक्ट में रजिस्ट्रेशन कराया गया जिसकी निबंधन संख्या S000230/2022-2023 है। इसके साथ ही संस्था का आयकर अधिनियम में भी निबंधन कराया गया। पैन कार्ड नंबर AAKAB3537G है।

आगामी सत्र के लिए प्रादेशिक अध्यक्ष के निर्वाचन की प्रक्रिया भी चल रही है। इससे संबधित विभिन्न चरणों के कार्य समयानुसार पूरे किए जा रहे हैं।

बिहार में नगर निकाय चुनाव कराए जा रहे है मारवाड़ी समाज के अधिक से अधिक योग्य प्रत्याशियों को उम्मीदवार बनाने एवं सक्षम उम्मीदवारों का हर प्रकार से सहयोग करने के लिए बिहार सम्मेलन के द्वारा विशेष प्रयास किए जा रहे है।

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल अध्यक्ष पुर्ननिर्वाचित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (केरला) की द्वितीय वार्षिक साधारण सभा होटल अबाड प्लाजा, एम जी रोड इर्नाकुलम में १६ अक्टूबर २०२२ को सम्पन्न हुई। सभा की शुरुआत अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी के स्वागत भाषण से हुई। पिछले दो साल में कोरोना महामारी की वजह से कार्य कुछ कम ही कर पाए। हमारा एक बड़ा प्रोजेक्ट अन्नपूर्णा रसोई सुचारु रूप से चल रहा है। जिस पर पूर्ण रूप से चर्चा हुई। आगे क्या क्या काम करना है इस पर चर्चा हुई। इसके साथ ही इस बैठक में नये अध्यक्ष का चुनाव भी हुआ जिसमें निर्विरोध श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी को सत्र २०२२-२४ के लिये अध्यक्ष चुना गया। इसके साथ ही नये कार्यकारिणी पदाधिकदारियों का भी चयन किय गया जो निम्नवत है। श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल प्रांतीय अध्यक्ष, श्री कुलदीप बैद प्रांतीय उपाध्यक्ष, श्री आलोक कुमार साबू प्रांतीय उपाध्यक्ष , श्री भावेश चांडक प्रांतीय महामंत्री, श्री नरेन्द्र कुमार प्रांतीय संयुक्त महामंत्री, श्री मोहन सुदा प्रांतीय कोषाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यगण श्री राम प्रकाश बंग, श्री अशोक अग्रवाल, श्री सौरभ अग्रवाल, श्री महेश कुमार गुप्ता, श्री अजय गुप्ता, श्री दीप चंद जैन। अंत में श्री आवेश चंडक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संक्षिप्त परिचय : श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी का जन्म २६ फरवरी १९५२ को राजस्थान के नोहर भद्रा शहर में हुआ। इनके पिताजी श्री चंपालाल बायवाला जाने माने उद्योगपति थे। १९६० में तमिलनाडु के शहर सेलम में फ्लोर मिल इंडस्ट्रीज की शुरूआत की।

इनकी शिक्षा मद्रास में LKG & UKG के बाद ये कोलकाता चले गए। वहां इन्होने ४-५ साल पढ़ाई की। मेट्रिकुलेशन बिहार से की। १९७३ में मद्रास से B A Economics पास की। १९७३ में मंगलौर मं इन्होन फ्लोर मिल की स्थापना की। २४ फरवरी १९७६ को श्रीमती दुर्गा बायवाला को अपना जीवन साथी बनाया। इन्होंने १९८७ में केरल के शहर कोच्ची में एक ओर फ्लौर मिल की स्थापना की और १९९० में परिवार के साथ यही रहने लगे। १९९२ में मिनी स्टील इंडस्ट्रीज की स्थापना की। ये बहुत सारी कंपनियों के मैनेजिंग डायरेक्टर और डायरेक्टर है। इनका बिज़नेस सेलम, विजयवाड़ा और कोचीन में हैं। इनका एक बेटा राहुल बायवाला और एक बेटी नेहा है। इनके जीवन में समाज एवं सेवा का बहुत ही महत्व है। ये सेवा से लिपत एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता है। इसके अलावा Friends of Tribals Society - Kerala के १० साल से अध्यापक है। CIISME - Kerala के अध्यक्ष, Indian Chamber of Commerce में काफी सालों से एक्टिव है एवं केरला के अन्य समाज जैसे, अग्रवाल समाज (केरला), जन-कल्याण सोसाइटी, नार्थ इंडियन एसोसिएसन, नार्थ इंडियन चैरिटेबल ट्रस्ट जैसी बहुत सी एसोसिएशन के अध्यक्ष रह चुके है और अभी भी इनसे जुड़े हुए हैं। हर समाज में अपना पूरा सहयोग देते है।

सम्मेलन की कामरूप शाखा ने सदस्यों का दिवाली मिलन समारोह आयोजित किया

मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा ने आगामी दिवाली को ध्यान में रखतें हुए शाखा सदस्यों के बीच दिवाली मिलन समारोह का आयोजन सांगानेरिया धर्मशाला में शाखा अध्यक्ष विनोद लोहिया की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर शाखा सदस्यों द्वारा प्रस्तुत रुक्मिणी सत्यभामा नृत्य नाटिका आकर्षण का केंद्र बनी रही। इसके अलावा जादूगर अनुज द्वारा बच्चों के मनोरंजन के लिये जादू के कई कारनामे दिखाए। गायक जरनैल सिंह ने फिल्मी गीतों से दिवाली का शँमा बांध दिया। इस अवसर पर भाग्यशाली दान पत्र का आयोजन भी किया गया। इससे पहले शाखा ने एक नई परंपरा की शुरुआत करते हुए दीप प्रज्वलित का समारोह का शुभारंभ किया। दीप प्रज्वलन में मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष ओमप्काश खंडेलवाल के साथ सहयोगी के रूप में शाखा अध्यक्ष विनोद लोहिया, साधारण सदस्य प्रदीप बजाज, सीए रतन अग्रवाल, अरुण गुप्ता, गंगा रतन सिंघानिया, डिंपल गिनोरिया, ममता नागौरी, कुसुम जालान, सुनीता जाजू, पुष्पा शर्मा मंच पर उपस्थित थे। शाखा अध्यक्ष के स्वागत भाषण के पश्चात मुख्य अतिथि खंडेलवाल ने अपना संबोधन दिया। इस उपलक्ष्य में शाखा मुखपत्र कामरूप दर्पण का विमोचन प्रांतीय अध्यक्ष श्री खंडेलवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) अरुण अग्रवाल, प्रांतीय संगठन मंत्री कृष्ण कुमार जालान, शाखा संस्थापक अध्यक्ष संपत मिश्र, निवर्तमान अध्यक्ष निरंजन सिकरीया, पूर्व अध्यक्ष व स्मारिका संपादक पवन जाजोदिया, रतन अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि कैलाश काबरा, सरला काबरा के अलावा गुवाहाटी शाखा की अध्यक्ष कंचन केजरीवाल, सदस्य सरोज जालान, संतोष काबरा उपस्थित थे। रुक्मिणी सत्यभामा नृत्य नाटिका में सरिता लोहिया, नीलम जाजोदिया, नीतू बखरेहिया और स्वीटी अग्रवाल ने शानदार अभिनय किया। इससे पहले शुभांगी शर्मा और नम्रता वर्मा ने गणेश वंदना नृत्य कर सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ किया। भूमि सिंघानिया, डिंपल गोयंका, हितार्थ सिंघानिया, माधुरी सरावगी, उन्नति बजाजा, दिव्या अग्रवाल ने नृत्य प्रस्तुत किया। दिव्या खाखोलिया औरदिशा खाखोलिया ने आंख पर पट्टी बांधकर जादू का प्रदर्शन भी किया। कार्यक्रम के अंत में उपाध्यक्ष सुजीत बखरेड़िया ने उपस्थित जन समूह का तम्बोला से मनोरंजन किया। कार्यक्रम संयोजक विनोद शर्मा तथा दान पत्र संयोजक संजय खेतान थे। शाखा सचिव दिनेश गुप्ता ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए अंत में सभी को धन्यवाद ज्ञापन दिया।

"एक खोज, प्रतिभा की" कार्यक्रम

नवरात्र, दुर्गा पूजा व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा "नृत्य एवं गायन" के क्षेत्र में समाज के बच्चों एवं युवाओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करने हेतु चार चरणों में "एक खोज, प्रतिभा की... (सीजन...२) नामक प्रतियोगिता का आयोजन गुवाहाटी में निम्नानुसार करने जा रही है :

१. ऑडिशन राउंड
   ६ नवंबर २०२२, रविवार
२. क्वार्टर फाइनल
   १३ नवम्बर २०२२, रविवार
३. सेमीफाइनल
   २७ नवम्बर २०२२, रविवार
४. ग्रैंड फिनाले
   २५ दिसम्बर २०२२, रविवार

नृत्य एवं गायन दोनों विधाओं में दो ग्रुप होंगे, जूनियर एवम् सीनियर। इस तरह कुल चार तरह की प्रतियोगिता होगी। आप से आग्रह है कि आप भी अपने शहर में इन प्रतियोगिताओं का आयोजन करें। नियमानुसार शाखाओं से हर प्रतियोगिता के प्रथम दो विजेताओंको गुवाहाटी में होने वाली प्रतियोगिता के द्वितीय चरण में एंट्री दी जायेगी।

निकट भविष्य में व्यक्तिगत रूप से विस्तृत जानकारी व नियमावली के साथ आपसे संपर्क साधा जाएगा।

इन प्रतियोगिताओं में आपकी शाखा द्वारा भाग लेने के लिए करबद्ध अनुरोध है।

आपकी सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा के साथ...

विनोद कुमार लोहिया, अध्यक्ष
दिनेश गुप्ता, सचिव
पवन पसारी, कार्यक्रम संयोजक
मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
गुवाहाटी

मण्डल "ग" के शाखाओं की गतिविधियाँ "मारवाड़ी सम्मेलन तथा मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा, सिलापथार के कार्यक्रम"

दिनांक १५ जुलाई २०२२ को डांस इंडिया डांस की रनर्स अप विजेता लिटिल मास्टर आद्याश्री उपाध्याय का सामाजिक अभिनंदन करके नन्ही बालिका को प्रोत्साहित किया गया।

कोविड-१९ वेक्सीनेसन शिविर का जो कार्यक्रम १५ जुलाई से चालू था विगत २४ अगस्त २०२२ को समापन किया गया। इस दरम्यान अनुमानित करीब ३००० से भी अधिक लोगों को बूस्टर कोविड-वेक्सिन का डोज दिया गया।

दिनांक २ अगस्त २२ को दसवीं तथा बारहवी कक्षा के परीक्षा में उत्तम श्रेणी से उत्तीर्ण अपने समाज के होनहार विद्यार्थियों को उनके घर जाकर अभिनंदन करके प्रोत्साहित किया गया।

११ अगस्त २०२२ को लेखा वाली स्थिति आर्मी कैंप की ५६ वी इन्फैंट्री डिवीजन के जवानों की कलाइयों को उनके कैंप में जाकर मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा की सदस्याओं ने "स्नेह व सम्मान का प्रतीक राखी" से सुशोभित किया। उनके इस कार्यक्रम में सम्मेलन के कार्यकर्ताओं की भागीदारी तथा इनफैंट्री डिवीजन के जवानों का आतिथ्य सराहनीय रही।

दिनांक १२ अगस्त तथा १४ अगस्त २०२२ को आजादी का अमृत महोत्सव का पालन करते हुए हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत तिरंगे बांटे गए तथा विभिन्न स्थानीय संस्थाओं के संयुक्त नगर परिभ्रमण कार्यक्रम में सम्मेलन की दोनों शाखाओं के सदस्यों ने हाथ में तिरंगा लेकर नगर परिभ्रमण कार्यक्रम में योगदान दिया।

दिनांक १५ अगस्त २०२२ को मारवाड़ी समाज का निर्माणाधीन मिलन भवन के प्रांगण में समाज की तीनों संस्थाओं ने संयुक्त रूप से समाज के ज्येष्ठ कार्यकर्ता श्री कमल जी जैन के कर कमलों द्वारा तिरंगा उत्तोलन कार्यक्रम संम्पादित किया एवं इस अवसर पर नगर में स्टॉल लगाकर शरबत वितरण किया गया।

दिनांक १७ सितम्बर २०२२ को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सौजन्य से आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव (Mega Blood Donation Drive) रक्तदान शिविर में सम्मेलन की दोनों शाखाओं के पूर्ण सहयोग से ७२ यूनिट रक्त संग्रह करके संग्रहालय में जमा करवाया गया उक्त कार्यक्रम के संदर्भ में दिनांक १ अक्टूबर को शाखा अध्यक्ष श्री पवन जैन तथा कार्यक्रम संयोजक श्री अनिल जैन व सम्मेलन और महिला शाखा को धेमाजी असामरिक चिकित्सालय के पदाधिकारियों द्वारा अभिनंदन करके प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा, धेमाजी, की गतिविधियां :–

दिनांक १५ अगस्त २०२२ को मा.यू.मंच, मा.सम्मे.तथा मा. सम्मेलन महिला शाखा, समाज की तीनों संस्थाओं ने मिलकर विभिन्न कार्यक्रमों के साथ स्वतंत्रता दिवस का अमृत महोत्सव मनाया। रुपकंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला स्मृति भवन परिसर में महिला सम्मेलन की पूर्व वरिष्ठ अध्यक्षा श्रीमती लक्ष्मी देवी बरेलिया के कर कमल द्वारा राष्ट्रीय ध्यज का उत्तोलन किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदो का स्मरण करते हुए सभी नागरिकों को राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सेवा देने का आहवान किया। उमेश जी खण्डेलवाल, कविता सिंहानीया, कमल शर्मा, संजम अग्रवाल, ललीता बंसल, आदि मौजूत कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता दिवस से सम्बंधित सम्बोधन रखे। राष्ट्रगान प्रस्तुति के बाद देशभक्ति गीत एवं कविताओं का पाठ किया गया।

इसी क्रम में अपराहन दो बजे से देशभक्ति आधारित चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। अंकुर से दसवीं श्रेणी तक के अर्धशताधिक छात्र-छात्राओं के बीच तीन वर्गों में क्रमशः "क" (तीसरी कक्षा तक के) "ख" (सातवीं कक्षा तक के) "ग" (दशवीं कक्षा तक के) वद्यार्थियों को लेकर आयोजित चित्रांकन प्रतियोगिता का संचालन मोनालिया आर्ट अकादेमी के अध्यक्ष प्रणव डिहिंगीया व वरिष्ठ चित्रकला शिक्षक रजनी हन्दीकोई ने किया। प्रत्येक वर्ग के लिए तीन तीन पुरस्कार तथा प्रशंसा पत्र देने का प्रावधान था।

अतिथि डॉ जोनाली बरूआ (प्रवक्ता मोरीढल कालेज) ने अपने वक्तव्य मे कहा कि चित्रांकन सकारात्मक व सृजनशील मानस का निर्माण करता है, मारवाड़ी सम्मेलन ने ऐसे प्रतियोगिता का आयोजन करके प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया है।

महिला सम्मेलन की शाखा सचिव रेखा खंडेलिया के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

दिनांक २७ अगस्त २०२२ को मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल के आवास गृह पर मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा के तत्वावधान में पूज्य राणीसती महारानी का भादवा अमावस तथा मंगल पाठ का भव्य आयोजन किया गया।

दिनांक १३ अक्टूबर २०२२ को महिला सम्मेलन की वरिष्ठ पूर्व अध्यक्षा श्रीमती लक्ष्मी देवी बरेलीया के आवास गृह में मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा के तत्वावधान में सुहागिनों

का पुज्य "करवा चौथ" व्रत उद्यापन का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन व मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा नार्थ लखीमपुर, की गतिविधियां :–

दिनांक १४ अगस्त २०२२ को मारवाड़ी सम्मेलन, एवं मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा द्वारा लखीमपुर विधानसभा के विधायक श्री मान मानव डेका के नेतृत्व में ७५ मीटर लम्बे राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के साथ तिरंगा यात्रा नामक नगर परिभ्रमण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

दिनांक २५ अगस्त को मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री राजेश मालपानी ने शंकरदेव शीशु निकेतन, अंगारखोवा के कृतत्वप्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत करके उनमें उत्साह वर्धन किया।

दिनांक ३० सितम्बर २०२२ को नवरात्रि के उपलक्ष्य में मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा एवं मारवाड़ी युवा मंच प्रगति शाखा के संयुक्त सहयोग से स्थानीय वासुदेव कल्याण ट्रस्ट परिसर में डांडिया नाइट २०२२ नामक एक डांडिया नृत्य का कार्यक्रम आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के उभरते कलाकारों को डांडिया नृत्य के माध्यम से अपनी अपनी प्रतिभाओं व योग्यता को प्रदर्शित करने का सु-अवसर देकर दोनों संस्थाओं ने प्रशंसा बटोरी।

दुर्गा पूजा के अवसर पर तारीख १ अक्टूबर २०२२ से नॉर्थ लखीमपुर मारवाड़ी समाज की सेवाभावी संस्थाओं के संयुक्त सहयोग से दुर्गा पूजा के दर्शनार्थियों तथा जनसाधारण के नमित शुद्ध पेयजल जल वितरण की व्यवस्था अपनाई गई, जो क्रमशः ४ अक्टूबर २०२२ तक संचालित रहा।

दिनांक ७ अगस्त २०२२ को श्रावण मास के अंतिम सोमवार को कावड़ सेवा के संदर्भ से बान्दरदेवा शाखा द्वारा लालूक पेट्रोल डिपो परिसर में कंवडियों को फलाहार, फ्रूट जूस व शरबत वितरण का कार्यक्रम अपनाया गया।

गुवाहाटी महिला शाखा ने किया ३५१ कन्याओं का पूजन

शारदीय नवरात्रि की पंचमी को, शाखा सदस्याओं ने मां कामाख्या धाम में ३५१ कन्याओं को तिलक लगाकर, चुनरी ओढ़ाकर, फूलमाला पहनाकर, भोग लगाकर, वस्त्र आदि अनेकों उपहार दिये। शक्तिदात्री माता इन नौ दिनों में भक्तों की हर पुकार सुन लेती है। चारों तरफ हर्ष और उल्लास का माहौल है। स्त्री तथा पुरुष अपने सुहाग की कुशलता एवम् परिवार की सुख शांति के लिए नौ दिन का उपवास रखते हैं। दसवें दिन सिंदूर खेला होता है, जिसके पश्चात मां अपने धाम को लौट जाती है। हमारे देश में यह मान्यता है कि कुमारी कन्याओं में माता का रूप होता है। छोटी-छोटी लड़कियों को माँ स्वरूपा मानकर, उनकी घर-घर पूजा होती हैं, हलवा पूरी का भोग लगाया जाता है। सदस्याओं ने बालिकाओं को खाने पीने की चीजें, पठन तथा प्रसाधन सामग्री भेंट की। सभी ने सम्मिलित रूप से इस महत आयोजन में पूर्ण सहभागिता निभायी। अध्यक्षा कंचन केजरीवाल ने बताया कि पिछले वर्ष यहीं पर २०१ कन्याओं का पूजन किया गया था। इस बार ३५१ कन्याओं का लक्ष्य रखा गया था। भगवती की कृपा से कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हो गया। कामाख्या स्कूल के प्राचार्य, कई पुजारियों तथा सुरक्षाकर्मियों ने काफी मदद की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मंत्री सरोज जालान, कार्यकारिणी सदस्य बिंदु जटिया, मधु हरलालका, चंदा तुलस्यान, मंजू मोदी, आशा चौधरी, संतोष काबरा, सत्या भातरा तथा ममता अग्रवाल, शेफाली गगड़, संगीता सरावगी, संगीता बैद, शांति कुंडलिया, बबिता गोयल, सीमा सोनी, उषा अग्रवाल, आशा शर्मा, संजना मोर, हेमलता तोदी, सोमू - सिद्धि चौधरी, कनकलता कोठारी, लता खंडेलवाल, नीलम मुरारका आदि का भरपूर सहयोग रहा।

प्रादेशिक समाचार : दिल्ली

श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया अध्यक्ष पुर्नर्निवाचित

१६ अक्टुबर २०२२ को दिल्ली में आयोजित दीपावली मिलन समारोह में दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सत्र २०२२-२०२४ के लिये निर्विरोध प्रान्तीय अध्यक्ष के रूप में पुनः श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया जी चुने गये है। यह घोषणा चुनाव अधिकारी श्री राज कुमार मिश्र ने समारोह में की एवं उन्होंने विशेष रूप से उनके सहयोगी रहे श्री सुन्दर लाल शर्मा व श्री गोपाल सुधार तथा सम्मेलन के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद किया जिनका चुनाव की प्रक्रिया में विशेष सहयोग रहा। उन्होंने मार्गदर्शन हेतु राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका का भी हार्दिक अभिनंदन करते हुये दिल्ली के पुनर्निर्वाचित अध्यक्ष श्री भुतोड़िया जी को हार्दिक शुभकामनाएँ दी।

पश्चिमी दिल्ली शाखा द्वारा दिवाली मेले का आयोजन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, पश्चिम दिल्ली शाखा द्वारा एक बहुत विशाल दिवाली मेले का आयोजन १६ अक्टुबर २२ को क्रिस्टल प्लेस नजदीक डीडी मोटर्स मयापुरी, नई दिल्ली में धूमधाम से मनाया गया।

मुख्य अतिथि श्री वी.पी. अग्रवाल समाजसेवी, विशिष्ट अतिथि, श्रीमती राजकुमारी दिल्ली विधायक हरि-नगर व श्रीमती किरण चोपड़ा - पार्षद हरि नगर रही।

गरिमामय उपस्थिति श्री पवन कुमार गोयनका (उपाध्यक्ष अ.भा.मा.स.) श्री लक्ष्मी पत भुतोड़िया (अध्यक्ष दि.प्रा.मा.स.) जी रहे। पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री राज कुमार मिश्रा भी उपस्थित रहे।

"अतिथियो को सम्बोधित करते हुए श्री गोयनका ने कहा कि समय की मांग है कि हम बचपन से ही समाज के बच्चों को मारवाड़ी संस्कृति एवं संस्कारों की शिक्षा दें, इसमें महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है"।

कार्यक्रम के संयोजक अध्यक्ष नवरतन मल अग्राल, समिति में श्री मनोज गर्ग तथा श्री बनवारी लाल शर्मा, सांस्कृतिक संयोजक श्री नारायण प्रसाद लाहोटी, पूनम चंद शर्मा, स्वागत समिति में श्री दामोदर शर्मा, किरण महिपाल, मंच संचालक - डॉ. संदीप मित्तल, श्री जयप्रकाश गुप्ता (बबल), प्रचार समिति - विजय दायमा व वैभव गुप्ता, कार्यकारिणी सदस्य - वीरेंद्र कुमार सिंघी, पवन कुमार शर्मा, धनराज नाई, राजेश तिवारी, श्याम सुंदर डीडवानिया, रघु प्रसाद तपड़िया, पंकज मखीजा, संजीव अग्रवाल, सतपाल गुप्ता, अविनाश पारीक, प्रवीण मित्तल द्वारा समारोह कार्य में पूर्ण सहयोग किया गया हैं।

कार्यक्रम की विशेषता रही कि पूरा सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज बन्धुओं, महिलाओं एवं बच्चों द्वारा किया गया। अंत में सभी ने रात्रि भोज का भी आनंद भी लिया।

झा.प्रा.मा.स. का अधिवेशन का आयोजन

आगामी १२-१३ नवंबर २०२२ को स्थानीय मारवाड़ी भवन, हरमु रोड, राँची में झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का ८ वा प्रांतीय अधिवेशन आयोजित होगा।

विदित हो कि प्रांतीय अधिवेशन में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री बसंत कुमार मित्तल पदभार लेंगे एवं सभा आयोजित व समिति का विस्तार होगा।

राँची में आहुत इस अधिवेशन को लेकर स्थाई समिति की बैठक में निर्णय किया गया कि राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन की आतिथ्य में अधिवेशन किया जायेगा, जिसकी स्वीकृति जिला अध्यक्ष सुरेश चंद अग्रवाल व जिला मंत्री ललित कुमार पोद्दार ने दी है।

वृहद प्रांतीय अधिवेशन के आयोजन की अपार सफलता के लिये सर्वप्रथम स्वागताध्यक्ष श्री महेश जी पोद्दार (पूर्व राज्यसभा सांसद) को मनोनीत किया गया है।

प्रांत सूचना के अनुसार जल्द ही श्री पोद्दार के मार्गदर्शन में आयोजित समिति का विस्तार किया जायेगा।

राजस्थानी भाषा की शाखाएँ व बोलियाँ

राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी गुर्जर अपभ्रंश से मानी जाती है। अपभ्रंश के मुख्यतः तीन रूप नागर, ब्राचड़ और उपनागर माने जाते हैं। नागर के अपभ्रंश से सन् १००० ई. के लगभग राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई। राजस्थानी एवं गुजराती का मिला-जुला रूप १६वीं सदी के अंत तक चलता रहा। १६वीं सदी के अंत तक चलता रहा। १६वीं सदी के बाद राजस्थानी का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा। १७वीं सदी के अंत तक राजस्थानी पूर्ण स्वतंत्र भाषा का रूप ले चूकी थी। राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या सात करोड़ से भी अधिक है। इसकी ७२ बोलियां मानी जाती है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने इसे स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दी है, परन्तु इसे अभी संवैधानिक मान्यता प्राप्त होना बाकी है।

राजस्थानी ओकारांत भाषा है। हिन्दी के आकारान्त एक वचन राजस्थानी में ओकारान्त हो जाते हैं यथा – कुत्ता-कुत्तो, पोमचा-पोमचो, घड़ा-घड़ो आदि। यह 'ट' वर्ण बहुला भाषा है। इसमें ळ, ण, उ अधिक प्रयुक्त होते हैं। न का ण (थाना-थाणा) ल का ळ (काल-काळ) हो जाता है। पष्ठी के रो, रा, री, राजस्थानी की निराली पहचान बनाते हैं।

राजस्थानी को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभक्त किया जाता है – (अ) पूर्वी, (आ) पश्चिमी। पूर्वी राजस्थानी की मुख्य बोलिया हे- – (१) दूँढाड़ी, (२) मेवाती, (३) हाड़ौती, एवं (४) अहीरवाटी। पश्चिमी राजस्थानी की मुख्य बोलियां हैं – (१) मारवाड़ी, (२) मेवाड़ी, (३) बागड़ी एवं (४) शेखावाटी। डॉ. तेस्सीतोरी ने पश्चिमी राजस्थानी का संबंध प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी से और पूर्वी राजस्थानी का संबंध पिंगल अपभ्रंश से माना है। इन दोनों के मध्य विभेदक संबंध परसर्ग का है। यह परसर्ग पूर्वी राजस्थानी की बोलियों में मिलता है। पश्चिमी राजस्थानी एवं गुजराती की बोलियों में नहीं मिलता। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार पूर्वी राजस्थानी ब्रजभाषा से प्रभावित है और पश्चिमी राजस्थानी गुजराती से। भाषा के यही दो रूप पश्चिमी और पूर्वी साहित्य में क्रमशः डिंगल एवं पिंगल नाम से जाने जाते हैं। डिंगल पश्चिमी राजस्थानी है जो दरबारी चारणों की काव्य भाषा थी। इस भाषा में अनुस्वारों और द्वित्व व्यंजनों की भरमार है जैसे– दंड, सुद्देश, सुल्तान, तज्जिय, कम्मान आदि। 'डिंगल' शब्द का प्रयोग भाषा के अतिरिक्त एक काव्य शैली विशेष के लिए भी होता है।

राजस्थानी बोलियों का प्रथम वर्णनात्मक दर्शक शोध १९०७-१९०८ में सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने आधुनिक भारतीय भाषा विषयक विश्वकोष (Linguistic survey of India) के दो खंडों में प्रकाशित किया था। यहां की भाषाओं के लिए राजस्थानी शब्द का प्रयोग भी पहली बार उन्होंने ही किया। इससे पहले अद्योतन सूरी द्वारा कुवलय माला में वर्णित १८ देशी भाषाओं को मरु कहा गया है। कवि कुशल लाभ के ग्रंथ पिंगल शिरोमणि तथा अबुल फजल की आईने अकबरी में भी राजस्थानी के लिए मारवाड़ी शब्द प्रयुक्त हुया है।

उन्होंने राजस्थानी भाषा की चार उपशाखाएँ बताई थी :–

१. पश्चिमी राजस्थानी– मारवाड़ी, मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावाटी।
२. मध्यपूर्वी राजस्थानी– दूंढाड़ी, हाड़ौती।
३. उत्तरी पूर्वी राजस्थानी– मेवाती, अहीरवाटी।
४. दक्षिणी पूर्वी– मालवी, निमाड़ी।

ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर सन् १९१४-१९१६ तक इटली के विद्वान एल.पी. तेस्सीतोरी ने इंडियन ऐन्टीक्वेटी पत्रिका के अंकों में राजस्थानी की उत्पत्ति और विकास पर अभूतपूर्व प्रकाश डाला।

राजस्थानी बोलियों का वर्गीकरण :–

(क) पांच भागों में जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण :

१. पश्चिमी राजस्थानी – मारवाड़ी तथा उसकी उपबोलियाँ।
२. उत्तरी पूर्वी राजस्थानी – मेवाती तथा अहीरवाटी।
३. मध्यपूर्वी राजस्थानी – दूंढाड़ी तथा इसकी उप बोलियां।
४. दक्षिण पूर्वी राजस्थानी – मालवी तथा रांगड़ी।
५. दक्षिणी राजस्थानी – निमाड़ी

(ख) एल.पी. तैस्सीतोरी का वर्गीकरण :

इटली के इस विद्वान ने सन् १९१४ ई से सन् १९१९ ई. के मध्य बीकानेर के दरबार में रहकर चारण तथा भाट साहित्य का अध्ययन किया। एल.पी. तैस्सीतोरी ने राजस्थानी बोलियों को दो भागों में बांटा : (१) पश्चिमी राजस्थानी (२) पूर्वी राजस्थानी।

(ग) नरोत्तम स्वामी का बर्गीकरण :

इन्होंने राजस्थानी बोलियों को चार वर्गो में बांटा :

१. पश्चिमी राजस्थानी - मारवाड़ी
२. पूर्वी राजस्थानी - दूंढाड़ी
३. उत्तरी राजस्थानी - मेवाती
४. दक्षिणी राजस्थानी - मालवी

(घ) मोतीलाल मेवारिया का वर्गीकरण :–

वर्तमान में इनका वर्गीकरण सर्वाधिक मान्य है। इन्होंने राजस्थानी बोलियों को पांच वर्गो में बांटा – १. मारवाड़ी २. मालवी ३. दूंढाड़ी ४. मेवाती ५. बागड़ी।

राजस्थानी बोलियों का विवरण :–

१. मारवाड़ी

कुबलयमाला में जिसे मरूभाषा कहा गया है, वही मारवाड़ी है जो पश्चिमी राजस्थान की प्रधान बोली है। मारवाड़ी का आरंभ काल ८वीं सदी से माना जा सकता है। विस्तार एवं साहित्य दोनों ही दृष्टियों से मारवाड़ी राजस्थान की सर्वाधिक समृद्ध एवं महत्वपूर्ण भाषा है। इसका विस्तार जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, पाली, नागौर, जालौर, सिरोही जिलों तक है। विशुद्ध मारवाड़ी जोधपुर एवं उसके आस-पास के क्षेत्र में बोली जाती है। मारवाड़ी के साहित्य-रूप को डिंगल कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति गुर्जरी अपभ्रंश से हुई है। जैन साहित्य एवं मीरा के अधिकांश पद इसी भाषा में है। राजियेश सोरठा, वेली किसन रुक्मणी री, ढोला मारवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में रचित हैं।

मारवाड़ी की उपबोलियाँ मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावाटी, खैराड़ी, देवड़ापाढ़ी गौड़वाड़ी।

मेवाड़ी— चित्तौड़-उदयपुर एवं उसके आस-पास के क्षेत्र को मेवाड़ कहा जाता है। इसलिए यही की बोली मेवाड़ी कहलाती है। मारवाड़ी के बाद राजस्थान की इस बोली के विकसित और शिष्ट रूप के दर्शन हमें १२वीं एवं १३वी शताब्दी में मिलने लगते हैं। मेवाड़ी का शुद्धरूप मेवाड़ के गांवों में देखने को मिलता है। मेवाड़ी में लोक साहित्य का विपुल भंडार है। महाराणा कुंभा द्वारा रचित कुछ नाट क इसी भाषा में हैं।

बागड़ी— डूंगरपुर एवं बोसवाड़ा के सम्मिलित राज्यों का प्राचीन नाम बांगड़ था। अतः वहीं की भाषा बागड़ी कहलायी, जिस पर गुजराती का प्रभाव अधिक है। यह भाषा मेवाड़ी के दक्षिण भाग, दक्षिण अरावली प्रदेश तथा मालवा की पहाड़ियों तक के क्षेत्र में बोली जाती है। भीली बोली इसकी सहायक बोली है।

शेखावटी— मारवाड़ी को उपबोली शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुंनु तथा चुरू जिले के कुछ क्षेत्र) में बोली जाती है। जिस पर मारवाड़ी एवं ढूंढाड़ी का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

गोड़वाड़ी— जालौर जिले की आहोर तहसील के पूर्वी भाग से प्रारंभ होकर वाली (पाली) में बोली जाने वाली यह मारवाड़ी की उपबोली है। बीसलदेव रासो इस बोली की मुख्य रचना है।

देवड़वाटी— यह भी मारवाड़ी की उपबोली है जो सिरोही क्षेत्र में बोली जाती है। इसका दूसरा नाम सिरोही है।

खेराड़ी— शाहपुरा, बूँदी आदि के कुछ इलाकों में बोली जाने वाली जो मेवाड़ी, ढूंढाड़ी एवं हाड़ौती का मिश्रण है।

(२) मेवाती— अलवर एवं भरतपुर जिलों का क्षेत्र मेव जाति की बहुलता के कारण मेवात के नाम से जाना जाता है। अतः यहाँ की बोली मेवाती कहलाती है। यह अलवर की किशनगढ़, तिजारा, रागगढ़, गोविन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़ तहसीलों तथा भरतपुर की कामां, डीग व नगर तहसीलों के पश्चिमोत्तर भाग तक तथा हरियाणा के गुड़गांव जिला व उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले तक विस्तृत है।

(३) मालवी— यह मालवा क्षेत्र (राजस्थान का झालावाड़ जिला व उससे लगते मध्यप्रदेश के जिलों) में बोली जाने वाली भाषा है। इस बोली में मारवाड़ी एवं ढूंढड़ी दोनों की कुछ विशेषताएं पायी जाती है। कहीं-कहीं मराठी का भी प्रभाव झलकता है। मालवी एक कर्णप्रिय एवं कोमल भाषा है। इस बोली का रांगड़ी रूप कुछ कर्कश है जो मालवा क्षेत्र के राजपुतों की बोली है।

(४) **निमाड़ी—** इसे मालवी को उपबोली माना जाता है। नीमाड़ी को दक्षिणी राजस्थानी भी कहा जाता है। इस पर गुजराती, भीली एवं खानदेशी का प्रभाव है।

(५) **ढूंढाड़ी—** उत्तरीय जयपुर को छोड़कर शेष जयपुर, लावा तथा अजमेर मेरवाड़ा के पूर्वी अंचलों में बोली जानेवाली भाषा ढूंढाड़ी कहलाती है। इस पर गुजराती, मारवाड़ी एवं ब्रजभाषा का प्रभाव समान रूप से मिलता है। ढूंढाड़ी में गद्य एवं पद्य दोनों में प्रचुर साहित्य रचा गया। संत दादू एवं उनके शिष्यों ने इसी भाषा में रचनाएं की। इस बोली को जयपुरी या झाड़शाही भी कहते हैं। इस बोली का प्राचीनतम उल्लेख १८वीं सदी की आठदेस गुजरी पुस्तक में हुआ है। **ढूंढाड़ी की प्रमुख उपबोलियां**– तोरावाटी, राजावाटी, चौरासी (शाहपुरा), नागर चौल, किशनगढ़ी, अजमेर, काठेड़ी, हाड़ौती।

तोरावाटी— झुंझुनु जिले का दक्षिणी भाग, सीकर जिले का पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग तथा जयपुर जिले का कुछ उत्तरीभाग को तोरावाटी कहा जाता है। अतः यहीं की चोली तोरावाटी कहलाई।

काठेड़ी— यह बोली जयपुर जिले के दक्षिणी भाग में प्रचलित है।

चौरासी— जयपुर जिले के दक्षिण-पश्चिम एवं टोंक जिले के पश्चिमी भाग में प्रचलित है।

नागरचोल— यह सवाई माधोपुर जिले के पश्चिमी भाग एवं टोंक जिले के दक्षिणी एवं पूर्वी भाग में बोली जाती है।

राजावाटी— जयपुर जिले के पूर्वी भाग में राजावाटी बोली प्रचलित है।

हाड़ौती— हाड़ा राजपुतों द्वारा शासित होने के कारण कोटा, बूंदी, बारां एवं झालावाड़ का क्षेत्र हाड़ौती कहलाया और यहां की बोली हाड़ौती जो ढूंढाड़ी की ही एक उपबोली है। हाड़ौती का भाषा के रूप में उल्लेख सर्वप्रथम के, लोंग की हिन्दी ग्रामर में सन् १८७५ ई. में किया गया। इसके बाद ग्रियर्सन ने अपने ग्रंथ में भी हाड़ौ ती को बोली के रूप में मान्यता दी। वर्तमान में हाड़ौती कोटा, बूंदी (इन्द्रगढ़ एवं नैनवा तहसीलों के उत्तरी भाग को छोड़कर) बारां (किशनगंज एवं शाहबाद तहसीलों के पूर्वी भाग के अलावा) तथा झालावाड़ के उत्तरी भाग की प्रमुख बोली है। कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की रचनाएं इसी बोली में हैं।

६. रांगड़ी— मालवा के राजपुतो में मालवी एवं मारवाड़ी के मिश्रण से बनी रांगड़ी बोली प्रचलित है।

७. अहीरवाटी— अहीर जाति के क्षेत्र की बोली होने के कारण इसे हीरवाटी या हीरवाल भी कहा जाता है। इस बोली के क्षेत्र को राठ कहा जाता है इसलिए इसे राठी भी कहते हैं। यह मुख्यतः अलवर की बहरोड़ व मुंडावर तहसील, जयपुर की कोट पुलती तहसील के उत्तरी भाग, हरियाण के गुड़गाँव, महेन्द्रगढ़, नारनोल, रोहतक जिलों एवं दिल्ली के दक्षिणी भाग में बोली जाती है। हम्मीर रासो, महाकाव्य, शंकर राव का भीम विलास काव्य, अलीबख्शी खयाल लोकनाट्य आदि की रचना इसी बोली में की गई है।

८. ब्रज— धौलपुर, करौली, भरतपुर में बोली जाती है।

राजस्थानी भाषा और बालियों पर विचार पूर्ण होने पर राजस्थानी शैलियों पर भी विद्वानों के विचार जान लेने चाहिए। राजस्थानी साहित्य की प्रमुख दो शैलियां हैं– १. डिंगल और २. पिंगल।

१. डिंगल— यह पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप– वीर रसात्मक है। इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से है। अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा रचित है। 'राजरूपक', 'अचलदास खींची री वचनिका', 'रोठौड़ रतन सिंह की वचनिका', 'राव जैतसी रो छंद', 'रुकमणि हरण', 'नागदमण', 'सगत रासौ', 'ढोला-मारू रा दूहा' प्रमुख ग्रंथ है। डिंगल शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध कवि आसिया बांकीदास ने अपनी रचना कुकवि बत्तीसी में किया था।

२. पिंगल— इस ब्रजभाषा एवं पूर्वी राजस्थानी के साहित्यिक रूप में अधिकांश काव्य भाट जाति के कवियों द्वारा लिखित है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से है। 'पृथ्वीराज रासो', 'रतन रासौ', 'खुमाण रासौ', 'वंश-भास्कर' इसके मुख्य ग्रंथ हैं।

— डॉ. रमेशचन्द्र शर्मा

विभिन्न ज्वर रोगों में तुलसी के प्रयोग

तुलसी के पौधों में मच्छरों को दूर भगाने का गुण और उसकी पत्तियों का सेवन करने से मलेरिया का दूषित तत्व दूर हो जाता है। इसलिए हमारे यहाँ ज्वर आने पर तुलसी और कालीमिर्च का काढ़ा बनाकर पी लेना सबसे सुलभ और सरल उपचार माना जाता है। डॉक्टर लोग इसके लिए कुनैन का प्रयोग करते है, पर कुनैन इतनी तेज गर्म चीज है कि उसके सेवन से बुखार दूर हो जाने पर भी अनेक बार अन्य उपद्रव खड़े होते हैं। उसमे खुश्की, गर्मी, सिर चकराना, कानों में सायं-सायं शब्द सुनाई पड़ना आदि दोष उत्पन्न हो जाते है। इसको मिटाने के लिए दूध-संतरा आदि रसों जैसे पदार्थो के सेवन की आवश्यकता होती है। जिसका सामान्य जनता को प्राप्त हो सकना कठिन ही होता है। ज्वर को दूर करने के लिए वैद्यक ग्रन्थों के कुछ नुस्खे इस प्रकार है –

१. जुकाम के कारण आने वाले ज्वर में तुलसी के पत्तो का रस सेवन करना चाहिए।
२. तुलसी के हरे पत्ते ५० ग्राम और कालीमिर्च २५ ग्राम दोनो को एक साथ बारीक पीसकर झरबेरी के बराबर गोलिया बनाकर छाया में सुखा ले। इसमें से दो गोलिया तीन–तीन घण्टे के अन्तर से जल के साथ सेवन करने से मलेरिया अच्छा हो जाता है।
३. तुलसी के पत्ते ११, कालीमिर्च ९, अजवायन २ माशा, सोंठ ३ माशा, सबको पीसकर ५० ग्राम पानी में घोल ले। तब एक कोरा मिट्टी का प्याला, सिकोरा या कुल्हड़ आग में खूब तपाकर उसमें उक्त मिश्रण का डाल दें और उसकी भाप रोगी के शरीर को लगायें। कुछ देर बाद जब वह गुनगुना थोड़ा गर्म रह जाये तो जरा सा सेधा नमक मिलाकर पी लिया जाए। इससे सब तरह के बुखार जल्दी ही दूर हो जाते हैं।
४. पुदीना और तुलसी के पत्तो का रस एक-एक तोला लेकर उसमें ३ माशा खांड मिलाकर सेवन करे। इससे मंद ज्वर में बहुत लाभ होता है।
५. शीत ज्वर में तुलसी के पत्ते, पुदीना, अदरक तीनों आधा-आधा तोला लेकर काढ़ा बनाकर पीये।
६. तुलसी के पत्ते और काले सहजन के पत्ते मिलाकर पीस ले। उस चूणें को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से विषम ज्वर दूर होता है।
७. मंद ज्वर मे तुलसी पत्र आधा तोला, काली दाख दस दाना, कालीमिर्च एक माशा, पुदीना एक माशा इन सबको ठड़ाई की तरह पीसकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।
८. विषम ज्वर और पुराने ज्वर में तुलसी के पत्तो का रस एक-एक तोला सप्ताह भर पीते रहने से लाभ होता है।
९. तुलसी पत्र एक तोला, कालीमिर्च एक तोला, करेले के पत्ते एक तोला, कुटकी ४ तोला सबको खरल में खूब घोटकर मटर के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा दे। ज्वर आने से पहले और सायंकाल के समय दो-दो गोली ठंडे पानी के साथ सेवन करने से जाड़ा देकर आने वाला बुखार दूर होता है। मलेरिया के मौसम में यदि स्वस्थ मनुष्य भी एक गोली प्रतिदिन सुबह लेता रहे तो ज्वर का भय नहीं रहता। ये गोलियां दो महीने से अधिक रखने पर गुणहीन हो जाती है।
१०. तुलसी पत्र और सूरजमुखी की पत्ती छानकर पीने से सब तरह से ज्वर में लाभ होता है।
११. कफ के ज्वर मे तुलसी पत्र, नागरमौंथा और सौंठ बराबर लेकर काढ़ा बनाकर सेवन करें।
१२. जो ज्वर सदैव बना रहता हो उसने दो छोटी पीपल पीसकर तथा तुलसी का रस और शहद मिलाकर गुनगुना करके चाँटे।

"आयुष्मान कार्ड योजना का कौन ले सकता है लाभ? कैसे करें आवेदन"

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी में कब कौन किस बीमारी से घिर जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता है। हमारे आसपास कई ऐसी बीमारियां और वायरस घूम रहे हैं, जो हमें पलक झपकते ही अपना शिकार बना लेते है। ऐसे में बीमार पड़ने पर इलाज करवाना पड़ता है या कई बार तो अस्पताल में भर्ती तक होना पड़ता है। लेकिन जो लोग गरीब वर्ग से आते हैं और जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं, वो लोग अस्पताल का बिल चुकाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे में अगर आप भी पात्र हैं, तो फिर आप भी आयुष्मान कार्ड बनवाकर अपना ५ लाख रुपये तक का मुफ्त में इलाज करवा सकते हैं।

पहले योजना के बारे में जाने

दरअसल, केंद्र सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की गई, लेकिन अब इस योजना से राज्य सरकारें भी जुड़ गई है। ऐसे में इस योजना का नाम अब बदलकर 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना-मुख्यमंत्री योजना कर दिया है। इसमें आयुष्मान कार्डधारक सूचीबद्ध अस्पतालों में अपना ५ लाख रुपये तक का मुफ्त में इलाज करवा सकता है।

ऐसे चेक कर सकते हैं अपनी पात्रता :–

स्टेप १

सबसे पहले इसके आधिकारिक पोर्टल pmjay.gov.in पर जाएं फिर 'Am I Eligible' वाले विकल्प पर क्लिक करें

अब आपने मोबाइल नंबर को वेरिफाई करवाएं, जिसके लिए फोन पर आए ओटीपी को दर्ज करें

स्टेप २

फिर नजर आ रहे हैं दो ऑप्शन में से पहले में अपना राज्य चुन लें जबकि दूसरे में मोबाइल नंबर और राशन कार्ड नंबर से सर्च करें। इसके बाद आपकी पात्रता आपको पता चल जाएगी। इन दस्तावेजों की होगी जरूरत

आप आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आवेदन करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको कुछ दस्तावेज चाहिए। इसमें आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड और एक मोबाइल नंबर शामिल है।

"ये है आवेदन का तरीका"

आप पात्र हैं, तो आपको आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए इसके आधिकारिक लिंक pmjay.gov.in के जरिए लॉगिन करना है। यहां पर आपको आगे का प्रोसेस फॉलो करना है और फिर आपका कार्ड बन जाता है।

आप ऐलोवेरा के बारे में कितना जानते हैं?

यह औषधीय पौधा भारत में सर्वत्र उपलब्ध है। इसे प्रायः दफ्तर और घरों में लगाया जाता है। साधारण से दिखने वाले इस पौधे में अनेक औषधिय गुण भरे हुये हैं। यह स्पसंबमंस कुल का पौधा है जिसे लैटिन में Aloe Vere Tourn और अंग्रेजी में Indian Aloe कहा जाता है। संस्कृत में इसे घृतकुमारी, गृहकन्या, हिन्दी में घी कुंवार, गुजराती में कुवा, मराठी में कोरफड़, बंगाली में घृतकुमारी, पंजाबी में कुआ, रंग दल, कर्नाट की में तौलसर, द्राविड़ी में कतालै, अरबी में नब्तेसिबारा और फारसी में दरख्ते सिब्र नाम से जाना जाता है।

इसमें कांड नही होते। जड़ के ऊपर से ही चारों तरफ मोटे-मोटे मांसल पत्ते, गूदे से परिपूर्ण, एक व दो फीट लम्बे व दो इंच चौड़े होते हैं, जिनके किनारों पर छोटे-छोटे कांटे होते है, जिससे ये पत्ते औरो की तरह दिखते हैं। क्षुप के मध्य भाग से इसमे एक लम्बा पुष्प ध्वज निकलता है, जिसमें रक्ताभ पुष्प शीतकाल के अंत में लगते हैं। इसके पत्तो को काटने पर पीताभ वर्ण का पिच्छिल द्रव्य निकलता है जो ठंडा होने पर जम जाता है, इसे कुमारी सार कहते हैं।

कुमारी सार में एलोइन ग्लुकोसाइड समूह होता है। एलोइन का मुख्य घटक बर्बिलोइन नोम हलके पीले रंग का स्फटिकीय ग्लुकोसाइड है। इसके अतिरिक्त कुछ शाल या एक सुगन्धित तेल होता है।

यह पाचन में भारी, स्निग्ध, पिच्छिल, रसायनी मधुर, पुष्टि कारक, वीर्यवर्द्धक और वात, विष, गुल्म शीतल तिक्त नेत्रों के लिए हितकारी, रसायनी मधुर, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक और वात, विष, गुल्म, प्लीय यकृत, अंडवृद्धि कफ, ज्वार ग्रन्थि, अग्निदाह, विस्फोटक, पित्त, रूधिर विकार तथा त्वचा रोगनाशक है।

अल्पमात्रा में सहदीपन, पाचन, मेदन, यकृत उत्तेजक तथा बड़ी मात्रा में विरेचन और कृमिध्न है। यह स्निग्ध पिच्छिह होने से है। उष्ण होने के कारण गर्भाशय गत रक्त संवहन को बढ़ा देता है तथा गर्भाशय की पेशियों को उत्तेजित कर उनका संकुचन बढ़ा देता है। इस कारण यह आर्तवजन और गर्भश्रावर है।

घृतकुमारी का उपयोग मधुमेह, गुल्म, कामला, यकृत, निर्बलता, प्रमेह, अतिसार आदि रोगों में भी होती है।

प्रयोग :

शिरोवेदना : सिर दर्द में घृतकुमारी के गूदे में थोड़ी दारूहरिद्र का चूर्ण मिश्रित कर गरम करके वेदना स्थान पर बांधने से वातज तथा कफज शिर शूल में लाभ होता है।

फोड़े व गाठ : यदि वण (फोड़ा) अपरिपक्य हो तो घृतकुमारी के गूदे में थोड़ी सज्जीखार तथा हरिदा चूर्ण मिलाकर व्रण शोध पर बांधने से फोड़ा जल्दी फूट जाता है। यदि फोड़ा पकने के निकट हो तो घृतकुमारी का गूदा गरम बांधने से फोड़ा और शीघ्रता से पक्कर फूट जाता है। जब व्रण (फोड़ा) फूट जाए तो गूदे में थोड़ा हरिद्रा चूर्ण मिलाकर बांधने से व्रण शोधन होकर, घाव जल्दी भर जाता है। गांठो की सूजन पर भी घृतकुमारी के पत्ते को एक और से छीलकर तथा उस पर थोड़ी हरिद्रा चूर्ण बुरक कर तथा कुछ गरम करके बांधने से लाभ होता है। चोट, मोच तथा कुचलने जाने पर शोध वेदना आदि लक्षण युक्त विकर पर घृतकुमारी के गूदे में अफीम तथा हल्दी चूर्ण मिलाकर बांधने से आराम मिलता है। स्त्रियों के स्तन में चोट आने के कारण या अन्य किसी कारण से गांठ या सूजन होने पर घृतकुमारी की जड़ की कल्क बनाकर उसमें थोड़ा हरिद्रा मिलाकर, गरम करके बांधने से लाभ होता है। इसे दिन में २-३ बार बदलना चाहिए।

खूनी बवासीर

घृतकुमारी के ५० ग्राम गूदे में २ ग्राम पिसा हुआ गेरू मिलाकर इसकी टिकिया बना ले। रूई के फोये पर टिकिया फैलाकर गुदा स्थान पर रखकर लंगोट की तरह पट्टी बांध देनी चाहिए। इससे मस्सों में होने वाली जलन तथा दर्द का शमन होता है। मस्से सिकुड़ कर दब जाते है। यह प्रयोग खूनी बवासीर में लाभदायक है।

अग्नि दग्ध

घृतकुमारी के गूदे को अग्नि से जले हुए स्थान पर लगाने से दाह (जलन) शान्त हो जाती है तथा फफोले नहीं उठते।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments
- Radiology

- MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
- Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- Cardiology

- ECG | - Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
- Treadmill Test (TMT)

- Wide Range of Pathology
- Pulmonary Function Test
- UGI Endoscopy / Colonoscopy
- Physiotherapy
- EEC / EMG / NCV
- General & Cosmetic Dentistry
- Elder Care Service
- Sleep Study (PSG)
- EYE / ENT Care Clinic
- Gynae and Obstetric Care Clinic
- Haematolgy Clinic
- Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep
- Health Check-up Packages
- Online Reporting
- Report Delivery

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

नेत्र पीड़ा

घृतकुमारी के गूदे पर हल्दी बुरककर थोड़ा गरम कर नेत्रों पर बांधने से नेत्र पीड़ा मिट जाती है। घृतकुमारी के एक ग्राम गूदे में ३७५ ग्राम अफिम मिलाकर पोटली बांधकर पानी में भिगो-भिगोकर नेत्रों पर फिराने से और एक दो बूंद नेत्रों में अन्दर डालने से नेत्र पीड़ा मिटती है।

तिल्ली

घृतकुमारी के गूदे पर सुहागा बुरककर खिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली व जिगर कम हो जाता है।

वायु गोला

घृतकुमारी का गूदा ६ ग्राम, गाय का घी ६ ग्राम, हरीतकी चूर्ण १ ग्राम, सेंधा नमक १ ग्राम इन सबको मिलाकर खाने से वायु गोला मिट जाता है।

मासिक धर्म

घृतकुमारी के ५० ग्राम गूदे पर पलाश का क्षार बुरककर सेवन करने से मासिक धर्म (माहवारी) शुद्ध होने लगती है।

कर्णशूल

घृतकुमारी के रस को गरम कर जिस कान में शूल (दर्द) हो, उस कान में टपकाने से कर्णशूल मिटता है।

उदरशूल

घृतकुमारी की २०-२५ ग्राम जड़ को कुचलकर ४०० ग्राम पानी में औटाकर, जब लगभग १०० ग्राम बचे तब छानकर उस पर चुटकी भर भूनी हुई हींग बुरककर देने से पेट दर्द मिट जाता है।

कटि पीड़ा

गेहूं के आटे में थोड़ा घी और घृतकुमारी का गूदा मिलाए। इन्हें गूंथकर रोटी बना ले। रोटी का चूर्ण बनाकर शक्कर और घी मिलाकर लड्डू बना लें। इस लड्डू का सेवन से सन्धिवात, आमवात, सर्वांगवात आदि में लाभ होता है।

चूर्ण

घृतकुमारी के पत्तों के दोनों ओर से छिलके अच्छी तरह छोटे-छोटे काट ले। ५ किलो टुकड़ों में आधा किलो नमक डालकर मर्तवान का मुख बन्द कर दो तीन दिन धूप में रखें व बीच–बीच में हिलाते रहे।

तीन दिन बाद इसमें १०० ग्राम हल्दी, १०० ग्राम धनिया, १०० ग्राम सफेद जीरा, १० ग्राम भुनी हुई हींग, २०० ग्राम अजवायन, १०० ग्राम लौंग, ५० ग्राम दाल चीनी, ५० ग्राम सुहागा, ५० ग्राम अकरकरा, १०० ग्राम काला जीरा, ५० ग्राम इलायची, ३०० ग्राम राई सब मसालो को महीन पीसकर घृतकुमारी के स्वरस में डालकर अच्छी तरह सुखाकर रखें।

रोगी के बल के अनुसार ६ ग्राम से ३ ग्राम तक की मात्रा में देने से पेट में वात, कफ सम्बन्धी कई विकार मिटते हैं। सूखने पर अचार, दाल शाक आदि में मिलाकर प्रयोग करे या गरम पानी के साथ सेवन करें।

जीवणों दोरो होग्यो

घणां पालिया शौक जीवणों दोरो होग्यो रे
देवे राम नें दोष जमानों फौरो होग्यो रे
च्यारानां री सब्जी ल्यांता आठानां री दाल
दोन्यूं सिक्का चाले कोनीं भूंडा होग्या हाल
च्यार दिनां तक जान जींमती घी की भेंती घार
एक टेम में छींकां आवे ल्याणां पडे उघार
जिवणों दोरो.....

मुंडे मूंड बात कर लेंता नहीं लागतो टक्को
बिनां कियां रिचार्ज रुके है मोबाईल रो चक्को
लालटेन में तेल घालता रात काटता सारी
बिजली रा बिल रा झटका सुं आंख्या आय अंधारी
जीवणों दोरो.....

लाड कोड सुं लाडी ल्यांता करती घर रो काम
पढ़ी लिखी बिनणियां बैठी दिनभर करै आराम
घाल पर्स में नोट बीनणीं ब्यूटी पारलर जावे
बैल बणें घाणीं रो बालम परणीं मोज उडावे
जीवणों दोरो.....

टी वी रा चक्कर में टाबर भूल्या खाणों पीणों
चौका छक्का रा हल्ला में मुश्किल होग्यो जीणों
बिल माथै बिल आंता रेवे कोई दिन जाय नीं खाली
लूंण तेल शक्कर री खातर रोज लडै घरवाली
जीवणों दोरो.....

एक रुपैयो फीस लागती पूरी साल पढाई
पाटी बस्ता पोथी का भी रुप्या लागता ढाई
पापाजी री पूरी तनखा एडमिशन में लागे
फीस कितावां ड्रेसां न्यारी ट्यूशन रा भी लागे
जीवणों दोरो.....

सुख री नींद कदै नीं आवे टेंशन ऊपर टैंशन
दो दिन में पूरी हो ज्वावे तनखा हो या पैंशन
गुटखां रा रेपर बिखरयोडा थांरी हंसी उडावे
रोग लगेला साफ लिख्यो पणं दूणां दूणां खावे
जीवणों दोरो.....

पैदल चलणों भूली दुनियां गाडी ऊपर गाडी
आगे बैठे टावर टींगर लारै बैठे लाडी
मैडम केवे पीवर में म्हें कदै नीं चाली पाली
मन में सोचे साव गला में केड़ी आफत घाली
जीवणों दोरो.....

चाऐ पेट में लडै ऊंदरा पेटरोल भरवावे
मावस पूनम राखणं वाला संडे च्यार मनावे
होटलां में करे पार्टी डिस्को डांस रचावे
नशा पता में गेला होकर घर में राड मचावे
जीवणों दोरो.....

अंगरेजी री पूंछ पकडली हिंदी कोनीं आवे
कोका कोला पीवे पेप्सी छाछ राव नहीं भावे
कीकर पडसी पार मुंग्याडो नितरो बढ़तो जावे
सुख रा साधन रा चक्कर में दुखडा बढ़ता जावे
जितरी चादर पांव पसारो मन पर काबू राखो
"पांडिया" भगवान भज्यां ही भलो होवसी थांको
जीवणों दौरो होग्यो रे

फिल्म

फिल्म का मई बन गई
जीवन का हिस्सा
अच्छी लगती है
क्यों?
कभी सोचा?
हमसे लेती नहीं कुछ
बल्कि देती है
बेशुमार खुशियां
भूमिका उसकी
अच्छी लगती है
जो खोकर अपना अस्तित्व
आपको हंसाता है
अपने गम छिपाकर
बांटता है आपको
मुस्कराहट
तीन घंटे में ले जाता है वहां
जहां
ताउम्र कोशिश कर भी
आप पहुंच नही पाते
ठीक इसी तरह अभिनय
जो कर पाता है
जीवन में
बुद को मिटाकर बनाता है
औरों को
अच्छा लगता है वही
'महानायक' है वही
मेरी नजर में
जीवन भी एक फिल्म है
बनाकर देखो
एक अच्छी फिल्म

प्रेमलता खण्डेलवाल

मृत्युबोध

सच्चे अर्थों में जीना सीखो
मृत्यु को भी जीना सीखो
मृत्यु को जीना सीखोगे
तो मृत्युंजय कहलाओगे।
लोग कहते हैं जीवन सुधारो।
मैं कहती हूं मृत्यु सुधारो।
हर पल हम जी नहीं रहे हैं।
बल्कि हर पल हम मर रहे है।
मृत्यु को जान लिया
तो जीवन जान गए
मृत्यु पर विजय पाई तो
जीवन पर पा गए।
अटल एवं शाश्वत है मृत्यु
एक कड़वा सच है मृत्यु
इसीलिए मरना सीखो
जो मरना सीख गए
वो तरना सीख गए।
रोज घुट-घुटकर
मरकर जीने की तुलना में
सच्ची मौत मरना सीखो
मृत्यु ही
जीवन की चरम परिणति है।

दो कवितावां

– रवि पुरोहित

(१.) थूं ई संभाळ तिड़कतै होठां री मळेवण

काळी-कळूटी आंधी रात
जगावती रैयी रात्यूं
सड़क री सूती-थाकल संवेदना नै,
झेलती रैयी
लोक रा अणगिण जैरीला पीवणा रो डंक
जगरातै रा माईक
बखाणता रैया
स्हैर री भगती-भावना गळो फाड़-फाड़
आखी रात
सतवंता पाक पौरादार
उळइया रैया बोतलां सूं हथाई में।
गूदड़ो बण
कळपती रैयी
लाचार लुगाईजात री
अजोगती मजबूरियां
इज्जतदारां री बहकती
रंगीन इच्छावां में,
बूढ़ो करमहीण अपंग बाप
खंखारै रै खंखार में
उछाळतो-देखतो रैयो
पूरी रात
जवान छोरी रा
हाथ पीळा हुवणै रा सपनां,
कड़कड़ दांत किटकाती ठंड में
दोलड़ीजता केई टेक्सीवाळा
ढूंढ़ता रैया
कुनबै सारू रोटियां,
ठा नीं कित्ती रातराणियां
मुरझाई,
टूटी,
बिखरी
अर जाय मिळी पीळी पड़ती दूब में
तो भी हार नीं मानै।
वांरो भरोसो
उडीकतो रैयो
थारै उजाळै नै रे सूरज,
अबै थूं ई संभाळ
वांरै इधकै सुपनां अर उम्मीदां नै...
डबडब आंख्यां री वांरी आस
टूटै नीं बस
वगत री मार सूं,
वांरा कळझळ जुझार काळजा
अबै थारी निगैदास्ती में,
थूं ई संभाळ अबै आंरै
तिड़कतै होठाँ री मळेवण
रे सूरज!

(२.) थूं छेवट

चावै कांई है रे मीत म्हारा,
मनगत तो बखाण
करूं तो कांई?

म्हारो अलापणो ई
नीं सुहावै थनै
हुय जावै आकळ-बाकळ
अर आवूं जे साम्हीं थारै
तो चुंधावै
थारी राती आंख्यां रा भूंवता कोइया!

बोलूं
तो चुभै थारै
अगन तीर-सा
अर धारूं मून
तो कळीजै
काळजो थारो

थ्यावस देवूं
तो किणविध छेवट
बेली म्हारा?
जे म्है पांगरूं
मुरधणी पसर जावै
थारै गरवीलै चोखटै
अर पूठ मोड़ूं
तो लखावै थनै
अेकलपणो

थारी
जिद्दी हरियल आंख नै
किणविध छांटा दैवूं
कै
निमधो पड़ै तपास
बळबळतै नैणां रो

आखा जतन कर धाप्यो बेली
थारी चावना समझ न आई

जे थूं चावै
थारै मन-मुजब
चाबी रै रमतियै दांई खेलूं
थारी आंगळी री धार
तो आ बस री नीं है
म्हारै

सूरज रै धीजै नै
मत पतिया रे बेली
म्है तो धारी
विगत प्रीत री
रीत निभाऊं
नींतर
औ सूरज कदै नीं आंथै!

– डी-42, विजय विहार,
सोफिया स्कूल के पीछे,
बीकानेर (राज.) ३३४००१
मो. : ९४१४४१६२५२
(जागती जोत से साभार)

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

श्रीब्रह्मोवाच

जयोरुगाय भगवन्नुरुक्रम नमोऽस्तु ते।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय त्रिगुणाय नमो नमः।।

हे भगवान्! आपकी जय हो। आप सब के द्वारा महिमान्वित हैं और आपके कार्यकलाप अत्यन्त यशस्वी होते हैं। हे योगियों के प्रभु, हे प्रकृति के तीनों गुणों के नियन्ता! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ। मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

नमस्ते पृश्निगर्भाय वेदगर्भाय वेधसे।
त्रिनाभाय त्रिपृष्ठाय शिपिविष्टाय विष्णवे।।

हे सर्वव्यापी भगवान्! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ क्योंकि आप प्रत्येक जीव के हृदय के भीतर स्थित हैं। तीनों लोक आपकी नाभि के भीतर निवास करते हैं, फिर भी आप इन तीनों लोकों से परे हैं। पहले आप पृश्नि के पुत्र रूप में प्रकट हुए थे। मैं उन परम स्रष्टा को सादर नमस्कार करता हूँ जिन्हें केवल वैदिक ज्ञान के द्वारा ही जाना जा सकता है।

श्रीप्रह्लाद उवाच

यया हि विद्वानपि मुह्यते यत—
स्तत्को विचष्टे गतिमात्मनो यथा।
तस्मै नमस्ते जगदीश्वराय वै
नारायणायाखिललोकसाक्षिणे।।

भौतिक ऐश्वर्य इतना मोहक है कि विद्वान तथा आत्मसंयमी व्यक्ति भी आत्म-सक्षात्कार के लक्ष्य को खोजना भूल जाता है। लेकिन भगवान् नारायण, जो ब्रह्मांड के स्वामी हैं, अपनी इच्छानुसार हर एक वस्तु को देख सकते हैं। अतएव मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूँ।

नेमं-विरिञ्चो लभते प्रसादं
न श्रीनं शर्वः किमुतापरेऽन्ये।
यन्नोऽसुराणामसि दुर्गपालो
विश्वाभिवन्द्यैरभिवन्दिताङ्घ्रि।।

हे भगवान्! आप विश्व पूज्य हैं, यहाँ तक कि ब्रह्माजी तथा शिवजी भी आपके चरणकमलों की पूजा करते हैं। इतने महान् होते हुए भी आपने कृपापूर्वक हम असुरों की रक्षा करने का वचन दिया है। मेरा विचार है कि ब्रह्माजी, शिवजी या लक्ष्मीजी को भी कभी ऐसी दया प्राप्त नहीं हुई; तो अन्य देवताओं या सामान्य व्यक्तियों की बात ही क्या है!

श्रीशुक उवाय

नमस्ते पुरुषश्रेष्ठ स्थित्युत्पस्यप्ययेश्वर।
भक्तानां नः प्रपन्नानां मुक्ष्यो ह्यात्मगतिर्विभो।।

हे भगवान्! हे सृष्टि, पालन तथा संहार के स्वामी। हे समस्त भोक्ताओं में सर्वश्रेष्ठ भगवान् विष्णु! निस्सन्देह, आप हम जैसे शरणागत भक्तों के मार्गदर्शक तथा गन्तव्य हैं। अतएव मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ।

श्रीराजोवाच

अनाद्यविद्योपहतात्मसंविद—
स्तन्मूलसंसारपरिश्रमातुराः।
यदृच्छयोपसृता यमाप्नुयु—
र्विमुक्तिदो नः परमो गुरुर्भवान्।।

भगवान् की कृपा से उन व्यक्तियों को जो अनन्त काल से आत्मज्ञान खो बैठे हैं और इस अविद्या के कारण भौतिक कष्टमय बद्ध जीवन में रह रहे हैं, भगवद्भक्तों से भेंट करने का अवसर मिलता है। मैं उन भगवान् को परम आध्यात्मिक गुरु स्वीकार करता हूँ।

न यत्प्रसादायुतभागलेश—
मन्ये च देवा गुरवो जनाः स्वयम्।
कर्तुं समेताः प्रभवन्ति पुंस—
स्तमीश्वरं त्वां शरणं प्रपद्ये।।

न तो समस्त देवता, न तथाकथित गुरु, न ही अन्य सभी लोग, स्वतन्त्र रूप से अथवा साथ मिलकर, आपकी कृपा के दस हजारवें भाग के बराबर भी कृपा प्रदान कर सकते हैं। अतएव मैं आपके चरणकमलों की शरण लेना चाहता हूँ।

त्वं त्वामहं देववरं वरेण्यं
प्रपध ईशं प्रतिबोधनाय।
छिन्ध्यर्थदीपैर्भगवन्वचोभि—
र्ग्रन्थीन्ह्यदय्यान्विवृणु स्वमोकः।।

हे परमेश्वर! आत्म-साक्षात्कार के लिए मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूँ। आप समस्त वस्तुओं के परम नियन्ता के रूप में देवताओं के द्वारा पूजित होते हैं। आप अपने उपदेशों से जीवन के प्रयोजन को प्रकट करते हुए कृपया मेरे हृदय की ग्रन्थि को काट दीजिये और मुझे जीवन का लक्ष्य बतलाइये।

प्रलयपयसि धातुः सुप्तशक्तेर्मुखेभ्यः
श्रुतिगणमपनीतं प्रत्युपादत्र हत्वा।
दितिजमकथयद्यो ब्रह्म सत्यव्रतानां
तमहमखिलहेतुं जिह्ममीनं नतोऽस्मि।।

मैं उन भगवान् को सादर नमस्कार करता हूँ जिन्होंने उस विशाल मछली का रूप धारण करने का बहाना किया जिसने ब्रह्मा के निद्रा से जगने पर उन्हें वैदिक साहित्य वापस लाकर दिया और राजा सत्यव्रत तथा महर्षियों को वैदिक साहित्य का सार कह के समझाया।

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

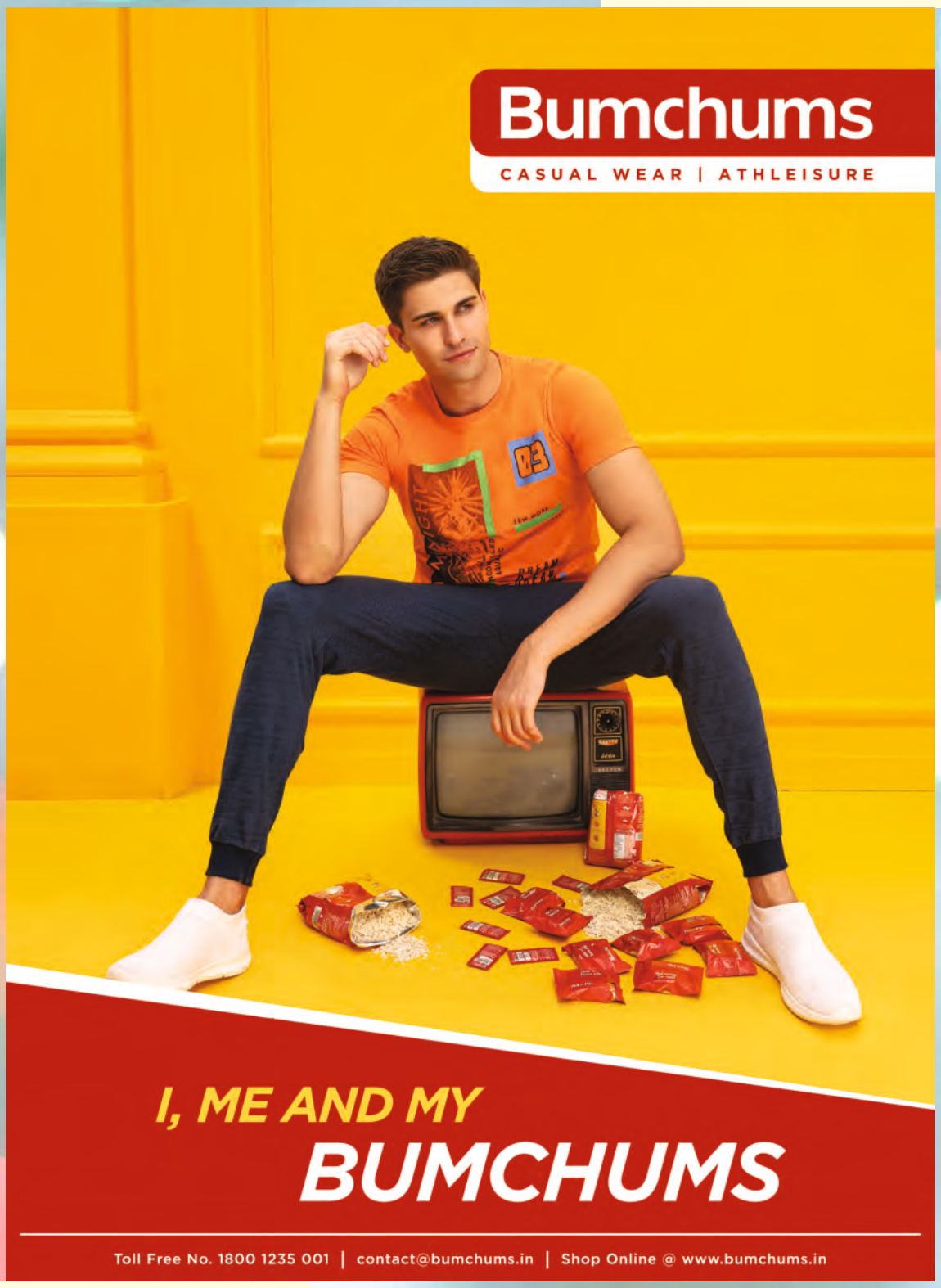

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 28th October 2022
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com